

**मौलिक हिन्दी नाटक**

**बल्ब जलेगा . . . ?**

रचना : फरीद बज़मी

**मंच पर**

नेता जी  
सिपाही पंछी लाल  
मास्टर गिरजाप्रसाद  
मुन्ना  
मंदा  
दुकानदार  
समीर, सैल्स रिप्रेजेंटिव  
चायवाला लड़का  
सुदर्शन, इक्विप्स कम्पनी का ऐरिया मैनेजर  
आदमी 1  
आदमी 2  
हवलदार फतेह सिंह  
सिपाही अजायब ख़ाँ  
सिपाही चतुर्भूज  
सिपाही यदुराज सिंह  
माडल रीता  
तनेजा , इक्विप्स कम्पनी का मालिक  
कैरोना, ए बी सी कम्पनी का डायरेक्टर  
अब्बास, ए बी सी का मैनेजर  
दिवाकर, ए बी सी का मैनेजर  
जग्गा, पेशेवर बदमाश  
प्रधानमंत्री  
प्रधानमंत्री का सचिव  
मुख्यमंत्री  
न्यायाधीश  
पीयूष, युवा पत्रकार  
सम्पादक  
मैंगफली वाला  
न्यूजरीडर

**नाटक के कापीराइट अधिकार "रंग विदूषक" के पास सुरक्षित है।**

सम्पर्क :  
सचिव, रंग विदूषक,  
प्लॉट न. 1414, रंगश्री लिटिल बैले प्रांगण, विज्ञान केन्द्र के पास, शांति मार्ग, शमला हिल्स  
भोपाल — 462 013  
दूरभाष : 0755 — 266 0083 E mail : rangvidushak @ hotmail.com,

सँत्रधार	देवियों और सज्जनों नमस्कार। अरे लाईट तो दे दीजिये.....जैसा कि आपको मेरे हाव भाव से महसूस ही हो गया हो गया, कि मैं ठहरा इस नाटक का सूत्रधार। सूत्रधार यानि एक उत्प्रेरक, जो कभी कभी नाटक की मूल कथ्य को हानि पहुँचाये बिना इसकी प्रक्रिया कभी तेज करता है तो कभी धीमी। इस नाटक में भी मेरा कुछ ऐसा की दायित्व है, बल्कि अन्य पात्रों की तुलना में कुछ ज्यादा भी। निर्देशक के अनुसार कहीं एक्टर कम पड़ गये तो सूत्रधार इन्टी मार लेगा, कोई एक्टर कोई प्राप्ती छोड़ गया तो उसे सूत्रधार उठा लेगा, और कहीं कोई संवाद भूल गया तो सूत्रधार उसे याद दिला देगा। यानि कि सूत्रधार सूत्रधार न हुआ, गोया कि तीन अटठारह का पाना हो गया। अब मैं आपको अन्दर की बात बताऊ, हमारे निर्देशक महोदय है न उनका दिमाग भी चल गया है। सरकार आये दिन बिजली की कटोती पर कटोती किये जा रही है और इनको सूझा है नाटक — बल्ब जलेगा। सारा मामला टकटकिया का है। अब बाकी एक्टरों को देखिये कैसे सजें सवरे हैं, मेकअप भी खूब जम कर मला अपने थोबड़े पर और कुछ ने बाकायदा अपने होने वाली बीबी और उसके घर वालों को आमन्त्रित किया है, तो कुछ ने अपने बास को और कुछ फोटोग्राफरों को बुलाया है। पर सूत्रधार .....
नेपथ्य से	तो तुम्हें क्यों जलन हो रही है, .....
कलाकार	अब ज्यादा बकबक मत करो, हम लोग अपनी इन्टी पर खड़े हैं, क्यू के इन्तजार में ,
सूत्रधार	तो मुझे दर्शकों को.....,
कलाकार	भाषण देना है, अबे चुपचाप आकर लाइन में लग जा और नेता बनकर अपने अरमान पूरे कर लेना , आओ यार, यह ऐसे नहीं जायेगा, ले चलो इस उठाकर कुछ कलाकार आते हैं, उसे कंधे पर बिठाते हैं और मंच के बाहर उठा कर ले जाते हैं तथा पुनः रैली के रूप में मंच पर प्रवेश करते हैं। जिसमें कुछ कलाकार और जुड़ जाते हैं। सभी के हाथों में पोस्टर जिन पर कुछ नारे लिखे हुए हैं। “ उपभोक्ता बंधु होश में आओ, अपना पैसा यूँ न गँवाओ ”, “लुभावने विज्ञापनों पर न जाना, सोच समझकर ही सामान खरीद कर लाना”। रैली मंच का एक चक्कर लगा कर सभा में परिवर्तित हो जाती है। सूत्रधार टोपी पहन कर मंच पर रखे समतल पर चढ़ जाता है।
कोरस	“ उपभोक्ता बंधु होश में आओ, अपना पैसा यूँ न गँवाओ ”, “लुभावने विज्ञापनों पर न जाना, सोच समझकर ही सामान खरीद कर लाना”।
सूत्रधार	क्यों भाई यह सर्किल ठीक रहेगा न ? कम से कम आईसक्रीम खाने वाले तो मजबूरी में बात सुनेंगे ही और मीडिया वालों की नज़र भी पड़ती रहेगी।
व्यक्ति	हाँ हाँ। क्यों थानें में सभा के बारे में बता दिया था न। ऐसा न हो कि चलती सभा में गिरफ्तारी हो जायें।
सूत्रधार	हाँ सीएम से लेकर डी एम और कान्स्टेबिल जनरल से लेकर कान्स्टेबल तक सबको बता दिया है।
व्यक्ति	चलो इसी बहाने पी आर तगड़ा कर लिया है। दोनों हैंसते हैं।
व्यक्ति	भाईयों और बहनों
व्यक्ति 2	अरे बहनें कहाँ है यहाँ
व्यक्ति	ठीक है। तो भाईयों और बहनों ..... के भाईयों। आप को यह जानकर खुशी होगी कि हमने यह सभा हमारे देश के मासूम और शोषित उपभोक्ताओं को जागृत करने के लिये आयोजित की है। इससे बड़ी खुशी की बात है कि हमारे बीच में देश के प्रख्यात विचारक, आलोचक, अर्थशास्त्री और विद्वान श्री बिन थाली के लौटे मौजूद हैं। हम उनसे अनुरोध करेंगे कि वह यहाँ आये और अपने महत्वपूर्ण उद्बोधन से सबको लाभान्वित करें।
लोटे	साथियों मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि आप लोग उपभोक्ता जागृति को लेकर एक मंच पर इक्ठठे हुए। और मुझे इस बात की प्रसन्नता भी है कि आपने मुझे इस अवसर पर आमन्त्रित कर मेरे विचारों को सम्मान प्रदान किया। साथियों यह तो सभी जानते हैं कि हमारे देश में जितनी तेजी से जनसंख्या बढ़ रही है उतनी तेजी से मनुष्य के दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों की संख्या भी। जैसे ही कोई नया शिशु पृथ्वी पर

	जन्म लेता है वैसे ही उसकी सेवा तथा जीवन रक्षा के लिए एक नई बेबी केयर प्रोडक्ट की कम्पनी भी अवतरित हो जाती है।
	सिपाही का हॉफते हुए प्रवेश। सिपाही एक कोने में बेत लेकर खड़ा हो जाता है।
सूत्रधार	अरे पंछी कहाँ मर गया था ?
पंछी	अरे टी आई साब ने साढ़े छः का टाईम दिया था।
सूत्रधार	अरे वो क्या है मीडिया वालों को मेला उत्सव में चमेली बाई का डांस कव्हर करने जाना है। उन्होंने कहा कि, आप अपना प्रोग्राम आगे खिसका लो। सोई .... अच्छा अब उधर खड़े हो जा। और इन्हें सुन। यह महात्मा गांधी के संगे पढ़े है।
पंछी	पर उम्र से इतना नहीं लगे है।
सूत्रधार	वो क्या है न, दिन में चार बार अलग-अलग कम्पनियों के च्यवनप्राश का सेवन करते है।
व्यक्ति	दोस्तो अब तो यह हाल हो गया कि कम्पनियों के नामकरण में भी दुविधा होने लगी है। अब मैं आपको अपने मित्र के घर का वाक्या सुनाऊँ जब मैं एक बार उनके यहां टायलेट गया और वापसी पर हाथ धोने के लिए साबुन मांगा तो इन्होंने ने रूपसियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला साबुन मेरे हाथ पर रख दिया। मैने उनकी तरफ हैरत आश्चर्य से देखा तो उन्होंने कहा कि क्या करूँ ?
व्यक्ति 2	भाई, रोज रोज एक नया साबुन का विज्ञापन पढ़ने में आता है। सभी साबुन चौखटे को चमकाने के लिए तो मैने उकता कर इन्हें यहां रख दिया और अपने मुँह धोने के लिए देशी तरीके से मुल्तानी मिट्टी इस्तेमाल करने शुरू कर दिया।
व्यक्ति 3	वो तो दिख ही रहा है। इनका चेहरा कैसा चांद की तरह चमक रहा है।
व्यक्ति	अरे अब देखिये उपभोक्ताओं को रिझाने के लिये कैसे कैसे विज्ञापन देखने में आ रहे है।
व्यक्ति 4	हाँ साहब,। आजकल विज्ञापन तो आते है मरदों के लिये पर उसमें जबरदस्ती लड़कियों को दिखाया जाता है। चाहे वो शेविंग क्रीम हो या बनियान का। परिवार के साथ बैठकर देखने में दुविधा होती है।
व्यक्ति 6	हमारी पड़ोसन का कुत्ता गड्डे में गिर गया। हमारे नौकर गोविन्दा से देखा नहीं गया और उसने छल्लों लगादी गड्डे में। फायर बिग्रेड वालो ने जब बाहर निकाला तो वह अपने दोनों पैर तुड़वा चुका था। सबने पूछा कि क्यों बे तुझ में अक्ल नहीं थी, क्या। तो कहने लगा कि हम रेड और व्हाइट सिगरेट पीने वालों की बात ही कुछ और है।
व्यक्ति 5	दुविधा यह नहीं है। दुविधा तो इससे भी बड़ी है। वो एक विज्ञापन है न, जिसमे हीरो जैसे ही अपने शरीर पर पावडर लगाता है, सोई तितलियाँ उसके पीछें मडराती हुई आ जाती है। तब से हमरा छुटका उसी पावडर की मांग करता है, कि स्कूल लगा कर जाऊँगा।
व्यक्ति 7	अरे छोड़िये खाने पीने वालों को दोष मत दीजिये। परोसने वालो के बारे में भी सोचिये। हम देख रहे है लाईव टेलीकस्ट में भूकम्प और रेल दुर्घटना, और बीच में वो दिखाते है, कर लो दुनिया मुट्ठी में।
व्यक्ति 3	अरे साहब गर्मी की छुट्टी में हम जा रहे थे, शिमला। दरवाजे पर हमने जैसे ही ताला लगाया तो हमारी मुन्नी पूछती है कि पापा आपने घर में ताला क्यों लगाया। मैंने कहा कि बेटा घर की सुरक्षा के लिये। तो उसने एक ब्रान्डेड टूथपेस्ट का नाम लेकर कहा कि पिताजी उस टूथपेस्ट से पूरे घर में पुताई करवा दीजिये। चौबीस घण्टे की सुरक्षा। सभी हँसते हैं। तभी एक आदमी मंच पर प्रवेश करता है वह सभा के बीच में से होकर दूसरी तरफ जाने की कोशिश कर रहा है। सिपाही डंडा मारता है और उसे बाहर खींच कर निकालता है। आदमी सिपाही को हतप्रभ से देखता रहता है। इस में उसकी चप्पल टूट जाती है।
सिपाही	क्यों बे यह सुरक्षा घेरा तोड़ कर कहाँ घुसा जा रहा है..... देखता नहीं मीटिंग चल रही है
गिरजा	वो तो मुझे भी दिख रहा है, लेकिन यह बताइये जो कि आपने मुझे मारा कैसे ?
सिपाही	अबे क्यों लफडा कर रहा है। अभी अन्दर कर दँगा साले को.....
गिरजा	अरे एक तो मारा और उपर से गाली भी दिया।

सिपाही      अबे चुप्प। अभी ले जाउगा थाने तो सब समझ में आ जायेगा।

गिरजा      चप्पल हाथ में उठा कर तो ले चलो थाने , डरता हूँ क्या, लेकिन यह बताओ कि मुझे मारा कैसे

सिपाही      उसके हाथ में चप्पल देखकर डरता है हॉ हॉ ठीक है अब चुप हो जा और भाषण सुन, काम आयेगा।

गिरजा      चप्पल नीचे डाल कर वो तो ठीक है। बेंत छीनकर हाथ दीजिये अपना। हाथ पर मारता है। अब दूसरा। लेकिन आपने

सिपाही      मारा कैसे अबे एक तो चलती सभा के बीच में घुस रहे थे, अब रोका तो मुझसे बहस करने लगे। अभी किसी बुद्धिजीवी या नौटकिये ने मेरी कम्पलेंट कर दी तो मेरी नौकरी तो गई....

गिरजा      ऐसे कैसे कर देगा। परमीशन ली थी उसने बीच रोड पर सभा करने की, आपने देखी ?

सिपाही      अपनी गलती मानते हुए हँ। यह तो नहीं देखा.....

गिरजा      तो चलिये उठक बैठक लगाईये दस बार।

सिपाही      हमसे यह उठक बैठक न लगवाओं। हमसे तो टी आई साब ने कहा था, सो चले आये ताजा हाट बाजार छोड़ कर सूखे चौराहे पर मरने विराम... कहीं आप वकील या कोई पत्रकार तो नहीं ?

गिरजा      नहीं, मैं तो एक अदना सा मास्टर हूँ

सिपाही      अरे आप मास्टर साहब है झुक कर तब तो अपने बच्चे की विनती सुनिये और थोड़ा ठंडा हो जाइए मैं खुद आपको आपके घर छोड़ आऊँगा श्री ..... क्या नाम बताया था आपने।

गिरजा      मास्टर गिरजा प्रसाद.....लेकिन आप रहने दीजिए बस जाती है मेरे घर तक। जाता है।

व्यक्ति 1      अरे भाई साहब थोड़ा बैठिये न।

गिरजा      अरे छोड़िये भाई साहब, मुझे बैंक जाना है।

व्यक्ति 1      अरे बैंक बन्द होने में तो अभी टाईम है। अरे उपभोक्ताओं के बारे में ही बात हो रही है।

व्यक्ति 2      क्यों बिन पेदी के लौटे कहाँ गये। अरे आप यहाँ क्या कर रहे है। आप को आने जाने का किराया ऐसे ही नहीं दिया है हमने। चलिये शुरू हो जाईये।

व्यक्ति      साथियों आपने अपने अनुभवों के माध्यम से उपभोक्ताओं की पीड़ा और शोषण को बहुत की काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया। इसी को ध्यान में रखते हुए हमें अपने उपभोक्ताओं बन्धुओं को यह भी बताना होगा कि उन्हें रिझाने के लिये शब्दों का कैसा माया जाल तैयार किया जा रहा है। जैसे जीरो परसेन्ट ब्याज पर ले जाईये। दो के साथ एक फ्री। अब पोली पैक में भी। गारन्टी और वारन्टी जैसे वजनदार शब्दों का इस्तेमाल बेधड़क किया जा रहा है। अब उपभोक्ता इन शब्दों के प्रलोभन फंस कर इनका शिकार बन जाता है।

व्यक्ति 2      अरे साहब यह सब विदेशी कम्पनियों द्वारा शुरू किये गये चोचले है। इनके बारे में भी तो बोलिये।

व्यक्ति 3      स्वदेशी कम्पनिया भी कुछ कम है क्या। वो भी तो कैसे कैसे विज्ञापन बनाती है। फिर उन्हीं की बात क्यों। करना है तो सबकी बात करें। सिर्फ मध्यमवर्ग लुट रहा है।

व्यक्ति 4      अरे भई अब तो उपभोक्ता न्यायालय भी खुल गये है। अगर हम लुट रहे तो वहाँ क्यों न जाये।

व्यक्ति      साथियों। प्यास लगने पर ही कुआँ न खोदे। बल्कि आवश्यकता है हमें पहले ही सजग और सतक्र रहने की। सब को जागरूक करने की। तभी एक आदमी एक परची लाता है। उसे देख कर पढ़ता है। वर्ल्ड बैंक के चमचे। अब ज्यादा बोर मत करें। अरे यह क्या दे दिया।

व्यक्ति 5      नारे लगाता है। उपभोक्ता बन्धु होश में आओ। लोटे साहब जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।

व्यक्ति      अरे त्रिपाठी जी, अभी हमारी बात समाप्त नहीं हुई है। आप के लोगों में जरा भी स्थिरता नहीं है।

- व्यक्ति 3 अरे यह दूसरी विचारधारा के लोग हैं। वो तो कैमरो के कारण साथ में बैठे हैं। बैठ जाईये। अब आप अपनी बात जारी रखें। **तभी एक आदमी कुछ गिलास बाँटता हुआ आता है। लोटे को भी देता है।**
- व्यक्ति तो साथियों जैसा कि आपको पहले भी बता चुका हूँ कि हमारे थोड़े से भी प्रयास से यदि एक भी आदमी जागृत होता है तो हम समझेंगे कि हमने अपने लक्ष्य को पा लिया है। इसी के साथ मैं अब अपना स्थान ग्रहण करने से पूर्व **लोटे बिना देखे ही गिलास लेकर एक सार्वजनिक घोषणा करना चाहूँगा कि मैं अपनी पुत्री के प्रीतिभोज में कोक और पेप्सी की जगह गिलास से पीता हूँ। सत्तू पिलाऊँगा। जय उपभोक्ता ....**
- व्यक्ति 5 नारे लगाता है। उपभोक्ता बन्धु होश में आओ। लोटे साहब जिन्दाबाद, जिन्दाबाद। **सभा विसर्जित होती है।**
- व्यक्ति 2 अरे त्रिपाठी जी, सूखा सूखा बड़े नारे लगवा दिये, भई आज कोई व्यवस्था है क्या ?
- व्यक्ति 3 अरे आज ड्राई डे है, महोदय।
- व्यक्ति 2 अरे आज काहे का ड्राई डे ?
- व्यक्ति 4 अरे आज करवा चौथ है। हम लोगों की पत्नियों के क्लब ने शहर की सारी दुकानें बन्द करा दी हैं।
- गिरजा आज करवा चौथ है।
- व्यक्ति 3 इसलिये तो कह रहे हैं कि आज घर में डाई डे है। चलो। **सबका प्रस्थान।**  
**मंच पर अंधकार**
- दृश्य 2**
- गिरजा बाबू के घर का दृश्य। कमरे में एक पलंग और रस्सी पर कुछ कपड़े टंगे हुए। पूरे कमरे में अंधेरा और केवल एक लालटेन जलती हुई उसकी रोशनी में एक लड़की पढ़ती हुई मंदा सफाई का काम करती हुई। बैठी हुई स्टोव पर चढ़े हुए कुकर को देखकर बड़बड़ाती हुई। कुकर में सीटी की जगह कागज की पोंगली लगी हुई।
- मंदा मैं अकेली जान हूँ क्या करूँ, क्या क्या न करूँ। देखों घर कितना गन्दा पड़ा है। इसके पिताजी भी अभी तक नहीं आये हैं। सोचती हूँ कि फटाफट घर का काम निपटा लूँ अभी लाईट गोल होने का समय आ जायेगा। वैसे ही घर के कामों से परेशानी, उपर से सरकार ने भी जनता को परेशान करने के लिये अच्छा तरीका ढूँढ निकाला है। **तभी एक गेंद आती है और उसके पीछे एक लड़का। ऐ....** मैंने मुझे कितनी बार मना किया, कितनी बार मना किया है कि मेरे घर के सामने आकर मत खेला करो। तुम लोगों को समझ में नहीं आता क्या। अभी पिछली बार तुम लोगों ने मेरी खिड़की का काँच तोड़ा था, अब क्या और तोड़ने का इरादा है। खबरदार एक भी बच्चा मेरे घर के सामने खेला तो। मेरी लड़की तो नहीं जाती तुम्हारे घर के सामने खेलने। तुम लोगों को हमेशा यही आने की पड़ी रहती है। चल उठा अपनी गेंद और भाग यहाँ से। दुनिया भर का काम करो कि इन बच्चों से निपटो। यहाँ तो भूख के मारे दम निकला जा रहा है। कब यह आये और मैं पूजा करूँ। **तभी दीवार पर गेंद के टकराने की आवाज आती है।** अरे यह क्या। दीवार पर गेंद लगी और मेरा बल्ब फ्यूज। **अंधेरा हो जाता है।** अरे यह तो सच में फ्यूज हो गया। मैंने मना किया था कि मत खेलो यहाँ। मारी गेंद दीवार में और झटके से बल्ब फ्यूज। अरी मुन्नी लालटेन कहा है री।
- मुन्नी माँ बल्ब उससे न थोड़ी फ्यूज हुआ है। गेंद तो दीवार में लगी थी।
- मंदा अच्छा। अब तू ज्यादा मेरी माँ बनने की कोशिश न कर। मैंने बोला कि गेंद दीवार में पड़ी थी, मतलब दीवार में पड़ी। और उससे ही बल्ब फ्यूज हुआ मतलब फ्यूज हुआ। समझी ज्यादा अक्ल मत दिया कर मुझे।
- मंदा **बच्चों के रोनी की आवाज आती है। मुन्नी को आवाज देकर।** अरी ओ पढ़ैया की अम्मा, अब इस अंधेरे में क्या दिख रहा होगा। मुन्ने को थोड़ी देर संभाल नहीं सकती।
- मुन्नी मा मेरा पेपर है।
- मंदा मा मेरा पेपर है। पढ़ लिख कर कौन सी अफसर बन जायेगी। पढ़ लिख कर भी चौका चुल्हा ही करना है। चल देख मुन्ने को .... वो भी पता नहीं किससे पिट के आया होगा।

मुन्नी उठ कर जाती है और किसी चीज से टकराकर गिरती है

मंदा दिखता नहीं है क्या

मुन्नी अंधेरा है मां....

मंदा क्योरी अभी पढ़ते वक्त तो सब दिख रहा था। अब बच्चों को संभालने को कहा, तो दीदे फूट गये। इस कमबख्त बल्ब को ही आज प्यूज होना था विराम एक तो वैसे ही इस पर घर में दिन में भी कुँ जैसे अंधेरा रहता है और इस पर यह बल्ब...सब सत्यानाश कर दिया....पता नहीं तेरे बाबू जी कहां रह गये...पता नहीं उन्हें याद भी है कि नहीं कि आज करवा चौथ है....जा देखकर आ....कहीं पान की दुकान पर देश की राजनीति को नहीं सीधा कर रहे। तभी बाहर से फिर से गेंद आती है। लड़का उसके पीछे भागता है। मन्दा देखती है और झाड़ू से मारने को भागती है। बच्चा भाग जाता है। गिरजा का प्रवेश। मन्दा धोखे में गिरजा को मार देती है। गिरजा बाबू वापस लौटते है।

गिरजा माफ करना बहनजी लगता है। अंधेरा होने के कारण गलत घर में घुस आया हूँ

मन्दा अरे ओ श्रीमान जी वापस चले आईये। सही घर में आये है।

गिरजा यह अंधेरा क्यों कर रखा है ....

गिरजा विग्स की तरफ जाकर बिजली के स्वीच को आन आफ करता है। मंदा इस बीच में कूकर उतार चाय का पतीला चढ़ाती है।

मंदा मत परेशान हो, बल्ब फ्यूज हो गया।

गिरजा अरे इसलिये तो मैं पिट गया। अभी कुछ दिन पहले ही तो बदला था...

मंदा तो क्या मैंने प्यूज कर दिया।

गिरजा तो इतना चिल्ला क्यों रही हो....शांति, शांति...

मंदा यह बताओं कि तुम पूजा का सामान ले आये।

गिरजा अरे वो तो मैं भूल गया। मैं अभी लेकर आया।

मंदा मैंने तुमसे कहा था न कि बैंक से पैसे निकाल लेना और सामान लेते आना।

गिरजा अरे बैंक जा ही रहा था, पर क्या बताये, बैंक बन्द हो गया था।

मंदा बैंक बन्द हो गया था। तुम कितने बजे गये थे।

गिरजा छः बजे।

मंदा छः बजे, शाम को छः बजे। हे राम। मैंने बोला था न कि ढाई बजे तक बैंक जाकर पैसे ले आना।

गिरजा अरे बैंक ही जा रहा था कि रास्तों में उपभोक्ता मंच वालो की रैली हो रही थी। उन्होने पकड़ कर जबरदस्ती बिठा लिया।

मंदा और तुम ठहरे दुनिया के सबसे बड़े बुद्धिजीवी।

गिरजा अरे नहीं बड़ी अच्छी बातें बता रहे थे वहाँ कि सामान कैसे खरीदे, खरीदते समय क्या क्या सावधानी बरते। केश मेमो ले वगैराह वगैराह। मैं अभी सामान लेकर आता हूँ

मंदा अब रहने दो। पूजा का सामान तो मैं ले आई हूँ अब हाथ मुँह धोकर ही जाना। गिरजा बाबू कोने में जाकर खड़े होते हैं। गिरजा बाबू मंदा के पास उकड़ू बैठते हैं। मंदा पतीले में से चाय छान कर उसके सामने चाय की प्याली पटक देती है। गिरजा उसका हाथ पकड़ता है वह अपना हाथ खींचकर तेजी से उठ खड़ी होती है।

गिरजा यह क्या, तुमने चाय में तो शक्कर डाली ही नहीं।

मंदा स्वगत अरे हे भगवान, शक्कर डालना तो मैं भूल ही गई। प्रकट अरे अभी तुम्हारे सामने मैंने दो चम्मच शक्कर डाली थी कि नहीं। ज्यादा मीठी मीठी पीकर पीकर तुम्हारा मुँह फीका हो गया है। इतनी मीठी मत पिया करो, नहीं तो शक्कर के मरीज हो जाओगे।

गिरजा गुस्सा हो क्या मंदा कोई जवाब नहीं देती अचानक कूकर को देखकर अरे इसे क्या हुआ मंदा....

मंदा दिख रहा है न, क्या हुआ

गिरजा अरे इस धनतेरस पर ही तो लिया था। हजार बार कहा है हमेशा सामान सोच समझकर खरीदो...अरे महंगा रोये एक बार और सस्ता रोये बार-बार अभी रैली वाले भी कह रहे थे... लेकिन तुम थी जो ये फटीचर कम्पनी का कुकर खरीद लाई ...

मंदा तभी तो यह बल्ब फ्यूज हो गया .....

गिरजा बस तुम्हें तो मौका मिलना चाहिए दूसरे की लू उतारने का...ठीक है मैं अभी आया बढ़िया सा बल्ब लेकर...ठोंक बजा कर।

मंदा बल्ब को मत ठोक देना, कॉच का होता है।

दोनों हँसते हैं। गिरजा बाहर की ओर जाने लगता है।

मंदा तेज आवाज से भूल मत जाना, जल्दी लौट आना। आज करवा चौथ है। अब मुझे भूख लग आई है। समझे।

दृश्य : 3

मंच पर एक दुकान जिसके आस-पास बिजली के सामान के विज्ञापन के पोस्टर लगे हुए। इक्लिप्स कम्पनी के पोस्टर दूसरी कम्पनी के पोस्टर की अपेक्षा आकर्षक दुकान के बीचों बीच एक बैनर लगा हुआ "140 घंटे तक जले लगातार",

कम बिजली की खपत, न खर्चा ज्यादा, बिना प्यूज हुए लगातार जो जलने का करे वादा"।  
दुकानदार अन्दर की तरफ खड़ा हुआ और सेल्समैन समीर शर्मा काउंटर पर झुके हुए कुछ लिखने में व्यस्त। दुकानदार के चेहरे पर बेचैनी। बिजली की दुकान बगल में ही एक चाय का ठेला जिस पर एक लड़का अपना सामान समेटने की कोशिश में कोने में बैठा एक फकीर कुछ गा रहा है। तभी गिरजा बाबू दुकान की तरफ बढ़ कर। रुक कर होर्डिंग पढ़ते हैं।

समीर अरे साई इतनी रात को अगरबत्ती क्यों जला रहे हो ?

दुकानदार अरे तुम्हारे जुतो से बदबू आ रही है।

आदमी 1 भाई साहब एक बल्ब देना। दुकानदार बल्ब उठाता है। अच्छी कम्पनी का देना। दुकानदार दूसरा बल्ब उठाता है।

दुकानदार महाबल्ब है मेरे भगवान।

आदमी 1 कितना का है।

दुकानदार मात्र 12 रुपये का।

आदमी 1 यह लीजिये।

समीर तो इस तरह हुए 9999।

आदमी 1 का प्रस्थान। आदमी 2 का प्रवेश।

आदमी 2 भाई साहब इस हीटर को देखेंगे ?

दुकानदार देखेंगे ही नहीं सुधार भी देगे ससुरे को। हीटर को देख कर अरे रे इसका तो प्लग खराब हो गया है। अरे रे इसकी तो क्वायल भी जल गई है। अरे यह क्या ? इसकी क्वायल का टेंशन भी खत्म हो गया। हीटर उठा कर काउन्टर पर मारता है। अरे इस ससुरे की तो पूरी बाड़ी ही डेमेज हो गई है। ऐसा करें कि परसो आओ।

आदमी 2 परसो ? अरे कल तक कर दीजियेगा।

दुकानदार बोला न परसों आओ भगवान। नहीं तो उठा कर ले जाओ ससुरे कबाड़े को।

आदमी 2 तो ठीक है, मैं दो दिन पीजा से काम चला लूँगा।

मँगफली वाले का प्रवेश।

मँगफली मँगफली वाला। गरमा गरम मँगफली। मँगफली बाबूजी।

समीर अब आधी रात को ही खिलायेगा। किसी और को देख।

दुकानदार यह लो ठीक हो गया।

दुकानदार क्यों भगवान, तुम्हारा हिसाब मिला की नहीं ?

समीर 8 बजे तक 9,999 बिक चुके है। यह बताओ कि तुम्हारा काम निपट गया।

दुकानदार अरे था ही क्या ससुरे में....दो मिनट में ठीक कर दिया।  
समीर तो फिर तुमने उस कस्टमर को क्यों बेवकूफ बनाया, अभी दे देते तो उसका काम चल जाता।

दुकानदार अभी धन्धे के मामले में पप्पू हो तुम भगवान। अभी दे देता तो मेरे हाथ में क्या आता, कुछ नहीं। पांच रुपये पटक देता वो भी बड़ी मुश्किल से कल दूँगा तो समझेगा बड़ा फाल्ट था कोई हीटर में....पचास रुपये का नोट रखेगा काउंटर ....समझे भगवान पटकने और रखने में फक्र ...विराम अब बस करो भगवान...दुकान बन्द करने का टाईम हो गया।

समीर बस दो मिनट और....मेरी छठी इंद्रिय कह रही है कि लाटरी कल के बजाय आज ही खुलेंगी...

दुकानदार तो ठीक हैं दस हजारवा बल्ब मैं ही खुद खरीद लेता हूँ  
समीर नहीं नहीं, मैं कम्पनी के साथ गददारी नहीं कर सकता है।  
**गिरजा बाबू दुकान के सामने आकर खड़ा होता है।**

मँगफली मँगफली वाला। गरमा गरम मँगफली। मँगफली बाबूजी।  
गिरजा अरे यहाँ तो इतने सारे बल्बस के विज्ञापन हैं, कि समझ में नहीं आता कि मैं कौन सा खरीदूँ

समीर लो सेठ जी संभालो अपना दस हजारवाँ बल्ब।  
दुकानदार **गिरजा बाबू** से आओ भगवान क्या सेवा करूँ आपकी  
गिरजा 100 वाट के बल्ब दिखाना।  
दुकानदार पूरे घर के ही बदलना है  
गिरजा नहीं, एक ही चाहिए। इससे पहले पूर्णमासी पर ही ले गया था, अमावसया के पहले ही अंधेरा कर गया।

दुकानदार अरे भगवान, किसी ने सही कहा कि मंहगा रोये एक बार, सस्ता रोये बार-बार.....यह देखिए **एक बल्ब निकालकर महाबल्ब**

गिरजा महाबल्ब ?  
दुकानदार अरे भगवान, कोला की तर्ज पर महाकोला और बल्बों में महाबल्ब। अरे वो देखिए **उपर दिखा कर** जब से दुकान खुली है यही जल रहा है **सेल्समैन की तरफ इशारा करके** इनसे पूछ लीजिए, शक की कोई गुंजायश नहीं। क्यों जी मैं सही बोला न, **समीर** से यार तुम भी तो कुछ बोलो।

समीर जी हाँ, हालात यह है कि यह बल्ब इन्हें रोज बदलना पड़ता है।  
गिरजा रोज ?  
समीर वो क्या है कि इतने बल्ब रोज बिकते हैं कि आखिर में स्टॉक में न रहने की वजह से कस्टमर इन्हीं का बल्ब निकलवा लेते हैं

दुकानदार **हंसकर** अरे यह तो मजाक कर रहा है।  
समीर मजाक नहीं साहब हकीकत है ये। **फोल्डर खोलकर दिखाता है** हमारी कम्पनी इक्विप्स ने किया है महाधमाका बल्बों की दुनियाँ में महाबल्ब बना कर। अरे साहब मध्यप्रदेश में जलाये और छत्तीसगढ़ में रोशनी पाये।  
आप लगाये, आने वाली पीढ़ियाँ फायदा उठायें।  
हमारी कम्पनी का है आपसे वादा, प्रकाश करे अधिक और बिजली को कम खपत का वादा”

दुकानदार लगा के दिखाऊं भगवान **होल्डर में बल्ब लगाता है**  
समीर **उसी लय में बोलता जाता है** श्रीमान बिजली का खर्चा करे कम, घर रोशन रखे हरदम।  
दुकानदार तों क्या सोचा ?  
गिरजा कितने का है ?



दुकानदार मात्र बारह रुपये इंडियन करेंसी में और एक साथ आधा दर्जन बल्ब लेने पर एक बल्ब मुप्त।

गिरजा के चेहरे से लगता है कि वह असमंजस में है। वो दुकान में रखे दूसरे बल्ब की तरफ देखता है।

समीर जुगनुओं का गया जमाना, हमेशा अब आप इक्लिप्स के महाबल्ब को ही आजमाना।

गिरजा लेकिन यह इक्लिप्स का ही बल्ब क्यों ?

दुकानदार अरे भगवान महेगा रोये एक बार और

समीर सस्ता रोये बार-बार। अरे श्रीमान दूसरी कम्पनियों बनाती है सिर्फ लट्टू जो सिर्फ जलते हैं और इक्लिप्स बनाती है बल्ब जो करते हैं घरों को रोशन। हम जांचते बल्ब के फिलामेंट को घंटों जला जला कर। इतनी कड़ी मेहनत के बाद पहुँचता है बल्ब आपके पास।

गिरजा यह सब तो मैं आपके पोस्टर में भी पढ़ चुका हूँ। फिर आप मुझे बार-बार क्यों बता रहे हैं

समीर अरे जनाब आप होंगे हमारे दस हजारवें ग्राहक। यानि दस हजारवाँ बल्ब बेचने पर सेठजी को मिलेगा कम्पनी की तरफ से एक गिफ्ट हैम्पर।

तो सोचिए मत ले जाईए और अपने दिमाग को यूँ न थकाईए।

ये देता हजार वाट की रोशनी सौ वाट में। लेकिन कीमत दूसरी कम्पनीज के हजार वाट से कहीं गुना कम।

इक्लिप्स का है वादा, खर्च कम रोशनी करे ज्यादा।

आप हकीकत में आजमाये और आज ही अपने घर में लगाये। और इसकी सबसे बड़ी क्वालिटी शब्दों पर जोर देकर अगर आप इसे जलाकर धोखे बुझाना भूल गये तो भी चिन्ता की कोई बात नहीं।

गिरजा मैं आपका मतलब नहीं समझा ? क्या कहा आपने ?

समीर देखिए एक सौ चालीस घंटों बिना प्यूज हुए जले लगातार। वोल्टेज के थपेड़ों का सहे हर प्रहार।

अब सोचना है एक बेकार, बल्ब खरीदिये सिर्फ एक बार।

गिरजा अविश्वास से एक सौ चालीस घंटे तक बिना प्यूज हुए जल सकता है लगातार। ठीक है थोड़ा मुझे सोचने दीजिए। दर्शको के पास आकर आपको विश्वास हो रहा है इनकी बात पर। तो ले लें क्यों भाई साहब आपके पास इनवर्टर है। दुकानदार गर्दन हिलाता है। अगर मैं इसे 140 घण्टे जला कर देखना चाहूँ तो ....तो जला कर दिखा सकते हैं। दुकानदार असमंजस में। समीर उसे इशारा करता है। दोनो सर हिलाते हैं। मुकरईयेगा नहीं। दुकानदार सिर हिलाता है। मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ

दुकानदार अरे हम क्यों मजाक करेंगे। बल्ब होल्डर में लगाता है।

गिरजा तो ठीक है, मुझे जरा सोचने दीजिये।

दुकानदार अरे भगवान, ऐसी भी क्या जल्दी है। परख लो, विचार लो, जांच लो, तब लेना इत्मीनान से।

गिरजा तो मैं क्या करूँ। अगर ऐसा वैसा बल्ब लिया तो फिर से मन्दा घर में पिटाई करेगी। क्या कहते हैं भाईसाहब ले लूँ वो बल्ब। अच्छा जाँच लूँ ठीक है तो बल्ब लगवा कर देखते हैं।

दुकानदार हँ तो भगवान क्या सोचा आपने।

गिरजा ऐसा कीजिये भाई साहब, बल्ब लगा रहने दो।

दुकानदार थोड़ी देर देखता है फिर समीर की तरफ देखता है दोनों असमंजस में। दुकानदार बल्ब की तरफ फिर हाथ बढ़ाकर।

दुकानदार बल्ब निकालें क्या ? तसल्ली हो गई....

गिरजा तो कितने पैसे हुए

दुकानदार बारह रुपये

गिरजा जेब से बैठे-बैठे ही पैसे निकलता है। दुकानदार बाकी पैसे लौटाता है।

दुकानदार यह लो आठ रूपये।  
 गिरजा कैशमेमो दे दीजियेगा और आपका वो पोस्टर भी। समीर पोस्टर देता है। दुकानदार कैशमेमो।  
 दुकानदार तो करुं पैक ?  
 गिरजा इतनी भी क्या जल्दी है। एक सौ चालीस घंटे बाद ही निकाल कर देना। नहीं, अब लगा ही रहने दो। देख तो लँ किये एक सौ चालीस घंटे तक बिना प्यूज हुए जल सकता है लगातार या ये श्रीमान दावा किये जा रहे है बेकार।  
 समीर अरे उसमें क्या दिक्कत है।  
 दुकानदार हँसता हुआ हां हां तसल्ली कर लो समीर की तरफ देखकर भगवान यह तो ऐसा लग रहा कि किसी के श्राद्ध में आया है  
 समीर अरे मसखरी कर रहा है गिरजा से हां हां श्रीमान खूब देखो आराम से.... तभी सीटी की आवाज आती है दुकानदार समीर को कोने में ले जाकर।  
 दुकानदार क्या कर रहे हो भगवान। अरे यह सचमुच ही बैठा रहा तो  
 गिरजा अरे कुछ नहीं। फालतू वक्त। अभी मच्छर काटेंगे तो खुद ही चल देगा।  
 दुकानदार वो ही सो मुसीबत है कि मुसीबत के वक्त मच्छर भी साथ नहीं देंगे आज ही म्युनिसपाल्टी ने यहां छिड़काव कराया है। कुछ सोचो भगवान।  
 समीर तुम सोचने का मौका दोगे, तभी न सोचूंगा। रूको मैं कुछ करता हँ। श्रीमान जी चाय पीजिएगा.....बगैर उत्तर लिए ही चाय की दुकान की तरफ देखकर सूत्रधार को आवाज लगा कर। अरे काका, तीन चाय ले आना सेठ जी की तरफ से।  
 दुकानदार लो हो गया गरीबी में और आटा गीला। अभी तो एक मुसीबत सर पर आकर बैठ गई है और उपर से तीन चाय की अलग चपत।  
 समीर वो कल हीटर में से एडजस्ट कर लेना।  
 दुकानदार अरे कल किसने देखा है।  
 सूत्रधार चाय लाता है। लेना सेठजी, जल्दी जल्दी पीना, दुकान बन्द करने का टैम हो गया है। आता होगा पंछी अपनी टमटमिया पर डण्डा टाँगे।  
 दुकानदार ठीक है इधर ही खड़ा रह। गिलास साथ ही ले जाना।  
 समीर एक ही चैट में चाय पीकर क्या बे ठंडी चाय लाया तू...दुकानदार से टेलीफोन मांगकर जरा देना अपने बास बात कर लँ  
 सूत्रधार अरे वो पानी में गिर गई थी, जल्दबाजी में मैं उसी को छान कर ले आया।  
 दुकानदार क्या बोला। उठा यह गिलास। चल। भाग यहाँ से।  
 विंग्स में से सीटी बजने की आवाज। सूत्रधार सब गिलास इकट्ठा करता है गिरजा अपनी चप्पल उतार कर अपने हाथों में लेता है। सूत्रधार भागता है। सिपाही का प्रवेश।  
 पंछी अरे जयराम। यह आधी रात को दुकान काहे खोले हो। क्या ससुर सरकार के जमाई हो। बन्द कर। यह बालाघाट नहीं है कि बिजली की कटोती ही न हो। अबे ओ चाय, इधर आओ। हमनें तुम्हें कल ही समझाया था, कि तुम ठेला बढा लिया करो। बन्द कर। सूत्रधार पाव पड़ कर जाता है। ऐ सुन, जरा एक चाय लाना खड़े चम्मच की। और मँगफली तुम, सूनी सड़क समसान में किसे मँगफली बेच रहा है। अबे कहीं सटटे की बुकिंग तो नहीं ले रहा। और यह क्या इन पुड़िया में गांजा।  
 मँगफलीवाला अरे नहीं बाबूजी नमक है, देख लो, चखलो। पुड़िया देता है।  
 पंछी क्यों बैठा, खाली खाली चखवायेंगा। चल फली दे जरा सी। चल अब फूट। और तू चाय नहीं लाया अभी तक।  
 सूत्रधार दूध का पैकेट ले आउ।  
 पंछी जल्दी लेके अईयों। साले तुमने भी अपने बाप का राज समझ रखा है। सूत्रधार के कूल्हों पर बँत जमाता है।  
 सूत्रधार अरे तुमने मारा कैसे ?

सिपाही अरे, आज हर आदमी ही ये सवाल कर रहा है, कि मारा कैसे, मार दिया तो मार दिया  
सूत्रधार मार वार नहीं दिया, मैं नाटक की बात नहीं कर रहा हूँ, मुझे तो यह बताओं कि तुमने मारा  
कैसे ? नाटक वाटक गया भाड़ में, आज तक रिहर्सल में तो मारा नहीं,  
सिपाही अरे भई धोखे से लग गया।  
सूत्रधार धोखे वोखे से नहीं, हम भी धोखे से गलत क्यू दे देंगे तो बेटा कर्टनकाल में भी नजर नहीं  
आओगे  
सिपाही अच्छा सर, गलती हो गई, मैं इन सबके सामने के माफी मांगता हूँ उठक बैठक लगाता है  
फिर से कर ले, थोड़ा सा रिवाईन्ड कर ले।  
सूत्रधार चलों। दर्शको से आय एम सारी। अबे ओ मारना मत।  
पंछी तो खुद ही कर लो। सूत्रधार डण्डा अपने कूल्हों पर लगाता है। पूरा दृश्य रिवाईन्ड होता है।  
पंछी अरे जयराम। यह आधी रात को दुकान काहे खोले हो। क्या ससुर सरकार के जमाई हो।  
बन्द कर। यह बिजली मंत्री का क्षेत्र नहीं है कि बिजली की कटोती ही न हो। अबे ओ  
चाय, इधर आओ। हमने तुम्हें कल ही समझाया था, कि तुम ठेला बढ़ा लिया करो। बन्द  
कर। सूत्रधार पाव पड़ कर जाता है। ऐ सुन, जरा एक चाय लाना खड़े चम्मच की। और  
मँगफली तुम, सूनी सड़क समसान में किसे मँगफली बेच रहा है। अबे कहीं सटटे की  
बुकिंग तो नहीं ले रहा। और यह क्या इन पुड़िया में गांजा।  
मँगफलीवाला अरे नहीं बाबूजी नमक है, देख लो, चखलो। पुड़िया देता है।  
पंछी क्यों बैठा, खाली खाली चखवायेंगा। चल फली दे जरा सी। चल अब फूट। और तू चाय  
नहीं लाया अभी तक।  
सूत्रधार दूध का पैकेट ले आउ।  
पंछी जल्दी लेके अईयों। साले तुमने भी अपने बाप का राज समझ रखा है। सूत्रधार को देखकर  
और साले, तुमने भी अपने बाप का राज समझ रखा है। बेंता मारना चाहता है।  
दुकानदार अबे क्या कर रहे हो। फिर से नाटक रूकवाओगे।  
सूत्रधार के गाने की आवाज आ रही है। मेरा पिया घर आया छे यार जी। मेरा पिया घर आया  
हो यार जी।  
दुकानदार बड़े अच्छे मौके पर आये है आप दीवान जी। अरे यह साहब ये जो अंगद जी बैठे हैं हमारी  
दुकान के सामने, इन्हें पता नहीं किस घड़ी में मैंने सेल्समैन के कहने पर बल्ब बेचा और ये  
मेरे सिर पर ही बैठ गये बल्ब जलाकर।  
गिरजा बिना मुड़े ही तमीज से बात करो। तुम लोगों के कहने से ही बैठा हूँ। अब मैं यहां से जाने  
वाला नहीं। पूरे एक सौ चालीस घंटे बल्ब जलवा कर ही मानूंगा, जरा देखू तो कितनी  
सच्चाई है तुम्हारी बकबक में।  
सिपाही अंय .... जरा इस हेकड़ की सूरत तो दूखें ?  
वह मुड़कर उनके सामने जाता है। गिरजा अपनी चप्पल की बद्दी ठीक कर रहा है। सिपाही इसे देख  
कर घबराता है।  
सिपाही अरे बाप से। कानूनी मास्टर। अबे तू ही निपट इससे।  
कह कर भागता है। सूत्रधार चाय लाता है।  
सूत्रधार अरे पंछी अरे कहाँ गया। हम भोपाल टाकीज से दूध लेकर आया था।  
दुकानदार व काका उसे जाता हुआ देखते रहते हैं। दुकानदार दुकान में दाखिल होता है। समीर अभी भी  
टेलीफोन पर बराबर डायल कर रहा है। दुकानदार कुछ बोलना चाहता है। तभी समीर उसे खामोश रहने  
का इशारा करता है।  
समीर हँ अब लगा इतनी मेहनत के बाद।  
मंच पर कोने में एक और प्रकाशवृत्त उभरता है। एक टेबिल पर टेलीफोन जिसकी घंटी बार-बार बज रही  
है। सुदर्शन चोपड़ा फोन उठाता है।

सुदर्शन      हलो...सर समीर दिस साईड.....न्यू मार्केट से ...क्या है सर , सर वो मैं यह कह रहा था ... अपनी कम्पनी के बल्ब के दावे को जांचने के लिए एक कस्टमर दुकान पर धरना देकर बैठ गया। तो सर मैं इससे परेशान .....क्या सर इससे हमारी ही पब्लिसिटी होगी... नहीं... नहीं... आज रात मैं मैनेज कर लूँगा ...कल आर रहे हैं न सर, कल सुबह ....ओं. के. गुडनाईट  
मंच पर अंधकार होता है।

दृश्य : 4

मंच पर मंदा सुबकती हुई। दो आदमी का प्रवेश। रोने की आवाज सुन कर डरते हैं।

आदमी 1      जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीश तिहीं लोक उजागर। नासे रोग हरे सब पीड़ा। जबत निरन्तर हनुमत वीरा। भूत पिशाच निकट नहीं आवें। महावीर जब नाम सुनावें।

आदमी 2      अरे भूत ऐसा सुर में थोड़ी रोते हैं, कुछ गड़बड़ है। अरे यह तो मास्टर साहब की घरवाली है।

आदमी-1      अरे भौंजी, क्या हुआ जो इत्ती रात को गला फाड़े पूरे मुहल्ले को जगा रही हो।

मंदा      भईया, वो चले गये।

आदमी 2      वो चले गये। रोता है।

मंदा      ऐसे नहीं गये भईया।

मंदा      बल्ब लेने गये थे मार्केट।

आदमी-2      अरे ऐसी की तैसी बल्ब को और....अब रात के दो बज गये हैं मार्केट तो कब का का बन्द हो चुका होगा। अब धीरज रखो, लौट आयेंगे।

आदमी-1      अरे भईया इसी की वजह से घर छोड़ सन्यासी हो गये होंगे। शाम को इनके घर से झगड़े की आवाज आ रही थी। यह बहुत दुष्ट है। यह तो उनको मारती भी है। मेरा लड़के ने बताया कि आज शम को इसने चार झाड़ू मारी थी उन्हें।

मंदा      अरे नहीं भईया, यह गलत है। आज करवा चौथ का ब्रत है मेरा।

आदमी 2      अरे भौंजी धीरज रखो। हम तो यह बताओं कि कहाँ ढँढे जाकर उनको पंछी सायकिल पर आता है

पंछी      क्यों, यह आधी रात को काहे का का मजमा लगाये खड़े हो।

आदमी      जयराम जी की साब। वो क्या है इनका मंदा को देखकर अरे भौंजी सामने तो आओ, कोई काट थोड़े ही खायेंगे। इनका घर वाला शाम से ही घर से गायब है।

पंछी      क्यों किस बात पर झगड़ा हुआ था तुम दोनों में, कोई पराई औरत का चक्कर?

मंदा यह सुनकर रोने लगती है तभी दूसरी औरत जवाब देती है।

औरत      नहीं साहब वो तो भले आदमी है।

पंछी      क्यों क्या तुम इसकी असिस्टेंट हो....चल चुपचाप उधर मंदा से क्या कोई नशा वशा करता है क्या? कैसा हुलिया है ?

मंदा      नहीं साहब, हमारे घर में आज बल्ब प्यूज हो गया तो कह कर निकले कि अभी जाता हूँ।

पंछी      बाई मैं पूछ खेत की रहा हूँ और तुम खलिहान की हॉक रही हो। अरे हुलिया क्या है उसका ?

मंदा      सफेद धोती कुर्ता पहने थे।

पंछी      बाई कपड़े नहीं हुलिया बता हुलिया।

मंदा      सांवले से, बाल घुघराले, गोल मुँह, दिखने में मास्टर से लगे है

पंछी      अरे तेरा सत्यानाश ....कहीं वो मास्टर जी तो नहीं ?

सब      हौं हौं वहीं....

सिपाही      उसे न्यू मार्केट में ढूँढ़ो वो वहां बैठा है बिजली के सामान की दुकान पर बल्ब जलाकर।

आदमी-1      वहां क्या कापी जांच रहे हैं बच्चों की ?

- 2 नहीं पेपर बना रहे होंगे। भईये तुम्हें भी हर टाईम मसखरी सूझती है ...  
 1 चलो शुक्र है भगवान का पता चल गया।  
 2 अब भौजी उनकी फोटो देखकर ही ब्रत खोल लेना।  
 मंच पर अंधकार होता है।

दृश्य : 5

बिजली को दुकान पर पुनः प्रकाश। गिरजा बाबू बाहर उसी अवस्था में बैठे हुए। फोटो ग्राॅफर विभिन्न कोणों से उनके फोटो खींचते हुए पुलिस वाले का प्रवेश, वो गिरजा बाबू को बैठा देखकर चौंकता है और वापस हो जाता है। सुदर्शन का प्रवेश।

सुदर्शन विजय इलेक्टिकल्स।  
 मॅगफली वाला पाँच रुपये छँटाक।  
 सुदर्शन हैलो व्हेयर इज़ विजय इलेक्टिकल्स।  
 मॅगफली वाला पुरानी है।  
 सुदर्शन अरे यार बिजली वाले की दुकान किधर है।  
 मॅगफली अरे वो, तो अग्रेंजी में पूछो न। उधर साईड।  
**सुदर्शन काउन्टर खटखटाता है। दोनों सोये पड़े है।**  
 दुकानदार कौन है यार। दुकान बन्द है। बल्ब खत्म हो गये। कल आना लेने।  
 सुदर्शन हैलो। आई एम सुदर्शन फ्राम इक्विप्स।  
 दुकानदार **हड़बड़ाकार** बड़े अच्छे मौके सो आये है भगवान। अरे यह आदमी कल रात से दुकान पर बैठा है। इसको यहाँ से उठाओं। आजकल कुत्ते को भी मारना हो तो परमीशन लेना पड़ती है। अरे बैठे बैठे निपट गया तो मेरे सिर पर पाप पड़ेगा  
 सुदर्शन ठीक है मैं कुछ न कुछ करता हूँ समीर को बुलाईये। **दुकानदार समीर को उठाता है। समीर आगे आता है** हलो समीर, हाउ आर यू  
 समीर फाईन सर  
 सुदर्शन कहां है भई वो हमारे ऑनरेबल कस्टमर  
 समीर ये रहे सर, मास्टर गिरजा बाबू  
 सुदर्शन हैलो हाउ आर यू. **गिरजा बाबू सिर हिलाकर जवाब देता है** आई थिंक यू आर टायर्ड...नहीं नहीं आप बैठे रहे। ये तो हमारे लिए बेहद खुशी की बात है कि आपने महाबल्ब के लिए इतना कीमती वक्त निकाला अरे आपने कुछ नाश्ता वगैरह लिया कि नहीं....अरे समीर, अरेंज सम ब्रेकफास्ट और देखो जो ये लोग आस पास खड़े उन्हें भी हटाओ।  
 समीर सर ये तो उनकी फेमिली के लोग ही हैं।  
 सुदर्शन ओह...आय ऐम सारी.....बच्चों की तरफ देखकर बेरी नाईस किड और आप लोग क्या खाओगे आई मीन फाईव स्टार, अमूल या कैडवरी...  
**बच्चों की कुछ समझ में नहीं आता। फिर इशारे से पूछता है कि कुछ खाना है तो वो विंग्स की तरफ इशारा करते है। सुदर्शन मुड़ कर देखता और समीर से पूछता है।**  
 सुदर्शन व्हाट इज दैट ?  
 समीर सर चावल के मुरमुरे और राजगीरे के लड्डूवाला खड़ा है।  
 सुदर्शन ओह....ठीक है, हाफ-हाफ केजी मंगवा दो, इन्हें बिल्कुल भी तकलीफ नहीं होना चाहिए और हां कपल के लिए कोई साउथ इंडियन डिश....या पिज्जा बर्गर ....  
 समीर सर यह लोग यह नहीं खाते है। पोहा जलेबी वगैराह पसन्द करते है।  
 सुदर्शन तो मंगाओं। कितने रुपये लगेंगे। हन्डेड या टू हन्डेड।  
 समीर नहीं सर पन्द्रह बीस में हो जायेगा।

सुदर्शन तो तुम पे कर देना और बाद में ले लेना। अच्छा सुनो रज्जाक से कह कर यहाँ के हर चौराहे पर पोस्टर बैनर लगवाओं और सबसे खास बात यह है कि इनकी दुकान पर बड़ा ग्लुसाईन वाला बोर्ड लगवा दो। **दुकानदार** से क्यों ठीक है न ?

दुकानदार भगवान मुझे नहीं लगवाना आपका बोर्ड फोर्ड। मैं तो यह बल्ब बेचकर ही मुसीबत में फंस गया हूँ। न तो दुकान बन्द कर पा रहा हूँ और न ही धन्धा। ऐसे तो हो गई दुकानदारी। इसे उठवाने का बन्दोबस्त करो भगवान।

सुदर्शन अरे घबरा क्यों रहे हो। एक सौ चालीस घंटे बाद अपने आप उठ जायेगा।

दुकानदार एक सौ चालीस घंटे तो क्या एक सौ चालीस मिनट नहीं ठहरने वाला हां आपके बस का नहीं है तो मैं ही कुछ करता हूँ।

सुदर्शन अरे सेठ जी...आपने अपने दामाद के लिये डीलरशिप के लिए भी एप्लाइ किया था न, वो अगले हफ्ते तक हो जायेगा...समझ गये।

दुकानदार ठीक है भगवान। यहाँ पर एक जो बोर्ड लगवाओं, उसमें बड़े बड़े अक्षरों से लिखवाओं विजय इलेक्ट्रिकल्स। उसके चारों तरफ निआन लाईट भी लगवाना मुझसे खरीद के। इतना बड़ा बोर्ड होना चाहिये कि पूरे रोशनपुरा मार्केट में एक दिखे।

सुदर्शन अब फोन कर लूँ **दुकानदार** सिर हिलाता है। हैलो जी सुदर्शन बोल रहा हूँ इक्लिप्स कम्पनी से, जरा एस.पी. साहब से बात कराये। **विराम** हैलो सुदर्शन दिस साईड...हाउ आर.यू. ...अरे यार तुम्हारी जरा सी हैल्प चाहिए...वो क्या है एक कस्टमर हमारी कम्पनी के बल्ब के लिए किये गये दावे को जांचने बैठ गया है ...अरे नहीं नहीं उसके बैठने से हमें कोई दिक्कत नहीं...हम तो उसको लेकर अपना पब्लिसिटी कैम्पेन शुरू करने जा रहे हैं...यही कोई एक छोटी सी एड फिल्म, कुछ फोटोज वगैरह ...हो इसलिए भीड़ से बचने के लिए...हां कुछ आदमी....पता ....अभी बताता हूँ **माउथपीस पर हाथ रखकर** पता ?

समीर विजय ट्रेडर्स न्यू मार्केट ...

सुदर्शन हॉ **हाथ हटाकर** हैलो विजय ट्रेडर्स न्यू मार्केट ...

दुकानदार अरे नहीं नहीं भगवान, साफ साफ बताओ कि नगर निगम वाली गली में है। क्योंकि आगे मेरे भतीजे ने भी दुकान खाले रखी है, न्यू विजय ट्रेडर्स।

सुदर्शन हॉ नगर निगम की जो शापस है न उसी में है विजय ट्रेडर्स। हॉ चार पाच लोग ही काफी होंगे...थैंक्स यारू...मिलने है शाम को घर पर ....ओ.के. **फोन रखकर** समीर....देखो मैंने किलाबन्दी करवा दी है थोड़ी ही देर में यहां कुछ सिपाही पहुँच जायेंगे और सुनो जरा इस आनर को समझाओ कि इसके बैठने से इसकी दुकान की भी पब्लिसिटी भी होगी।

**चाय वाला तभी चाय लाता है**

सूत्रधार बाबूजी चाय।

सुदर्शन नहीं नहीं उन्हें दो, गिरजा और मंदा की तरफ देखकर आप लीजिए...समीर नाश्ते, पानी में कोई कसर मत रखना। हिसाब बाद में कर लेना। **प्रस्थान करता है। फिर वापस पलट कर डायरी देकर।**

सूत्रधार कोई बात नहीं साल भर बाद ले लेंगे। साईन मार देना इस पर और एक सौ इक्यावन रुपये भी दे देना।

समीर किस बात के।

सूत्रधार शगुन के तौर पर, नया एकाउन्ट खोल रहे है न आप।

समीर बेशक सर, लेकिन मैं तो डर ही गया था कहीं कोई झमेला न खड़ा हो जाये।

सुशील अरे समीर, झमेलों को कोख से ही मेलो का जन्म होता है। वैसे समीर इट इज ए ग्रेट अपार्चुनिटी, चांस मिस नहीं करना है। हम भी सबको दिखा देगे कि हमारा रीजनल आफिस किसी से कम नहीं है। मैं आफिस से दो चार आदमी भेजता हूँ तुम्हारी हैल्प के लिये। इनके स्टिल भी करवा लेना। समीर जब स्टिल हो जाये तो इनकी कापीज मुझे भिजवा देना।

**मंच पर अंधकार होता है।**

दृश्य : 6

थाने का दृश्य। सभी सिपाही एक लाईन में खड़े हुए। जिसमें पंछी लाल भी खड़ा हुआ। हवलदार हाथ में रोल काल लिए हुए। बात बात में आँखें बन्द करता है। दुकानदार हाथ में एप्लीकेशन लिए पहुँचता है। सब सिपाही बारी बारी से एक दो तीन बोलते हुए....

हवलदार चल सब सौ ग्राम। बीस ग्राम। सौ ग्राम। बीस ग्राम। क्यों रे पप्पू हम कह रहे हैं सौ ग्राम और तुम कर रहो दस ग्राम।

हवलदार अजायब खाँ

अजायब खाँ हाजिर श्रीमान

हवलदार आज कोर्ट पेशी में तीन मुल्जिम ले जाना हैं। चतुर्भुज

चतुर्भुज उपस्थित श्रीमान

हवलदार भारत टाकीज के साथ साथ स्टेशन भी देखना है। यदुराज सिंह

यदुराज उपस्थित श्रीमान

हवलदार संतरी डियूटी ...और मिस्टर रफ एण्ड टफ

पंछीलाल उपस्थित श्रीमान

हवलदार न्यू मार्केट पाइंट...

पंछीलाल श्रीमान आप मेरी संतरी डियूटी लगा दे पर मैं मार्केट नहीं जाऊंगा

हवलदार ऐ मिस्टर डॉट टाक टू मी लूज़। समझे

पंछीलाल गिरजा ...

हवलदार ऐ... हम एक देगें कनपटी पर तो दीवार पर चिपक जाओंगे छिपकली की तरह।

पंछी सर हमारा यह मतलब नहीं है, वहाँ गिरजा सिंह नाम का एक आदमी है।

हवलदार कौन गिरजा ? कोई नया बदमाश आया है या कोई पुराना जिला बदर।

पंछीलाल अरे नहीं। श्रीमान वो....

हवलदार अरे वो वो क्या रहा है आगे भी तो कुछ बको।

पंछी अरे आप समझ नहीं पा रहें हैं, ये उनसे भी खतरनाक है।

हवलदार क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो, पंछी। एक बदमाश की वजह से हम लोग पुलिस की नौकरी करना छोड़ देंगे।

इतने में दुकानदार भी अपनी अपनी लेकर आगे बढ़ता है

दुकानदार यह सही कह रहे हैं, भगवान। वो तो चोर उचक्कों से भी खतरनाक है साहब।

हवलदार ऐ मिस्टर गिचर पिचर। तू हूँ

दुकानदार जयराम जी।

हवलदार जयराम जी। नाम बोल।

दुकानदार जयराम जी हुजूर।

हवलदार अबे कितनी बार जयराम करेगा। नाम बता अपना।

दुकानदार अरे भगवान मेरा नाम ही जयराम है।

हवलदार तो नीचे बैठ जा।

पंछी ये बिल्कुल सही कह रहे हैं भगवान।

हवलदार ऐ मिस्टर रफ एण्ड टफ। बात को रबर की तरह मत तानों। मुझे एक लाईन में बताओ अर्जी लेकर पढ़ता हूँ..हूँ

दुकानदार वो क्या है कि....

टेलीफोन की घंटी बजती है। हवलदार फोन उठाकर।

हवलदार प्रधान आरक्षक फतेह सिंह, थाना सिटी कोतवाली से निवेदन कर रहा है। बताये श्रीमान कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ। जय हिन्द श्रीमान...जी... जी श्रीमान...माउथपीस पर हाथ रखकर टाइगर का फोन है। सब सैल्यूट करते हैं।

सिपाही क्यों यह टाइगर कौन है।

सिपाही 2 एस पी साहब। सिपाही 1 सैल्यूट करता है।

हवलदार न्यू मार्केट में, विजय ट्रेडर्स...जी हां श्रीमान बिजली की दुकान...जी हां 1-4 का गार्ड भिजवा देते हैं...जी हाँ श्रीमान मैं स्वयं ही जाऊंगा...जय हिन्द श्रीमान। फोन रखता है। कोई मास्टर गिरजा बाबू है, बिजली की दुकान पर धरने पर बैठा है। माईक वन साहब ने कहा कि उसको सिक्योरिटी देना है।

पंछी सुन लिया श्रीमान कितना खतरनाक आदमी है...

हवलदार अबे चुप्प।

दुकानदार भगवान जो मैंने आपको दरखास्त दी है, उसे तो पढ़ ले।

हवलदार क्यों पप्पू अपन ने हवालात में बल्ब कब लगवाया था।

पंछी होली पर।

हवलदार और फयूज कब हुआ

पंछी पंचमी पर।

हवलदार **आँखे बन्द करे हुए।** पागलों की तरह मत बात करो। **दुकानदार भाग जाता है।** एक आदमी तुम्हारे दावे को जांचने क्या बैठ गया कि सारी हवा निकल गई तुम्हारी। चल भाग यहाँ से। क्यों तुम्हारी कम्पनी ने ही दावा किया था न, बस भुगतो। एक शरीफ आदमी को क्यों उठा दे, गाली दी क्या तुम्हें या किसी को लूट रहा है वो तुम्हारी दुकान के सामने बैठकर भाग साले चोर। **सारे सिपाही भी भाग जाते हैं।** पप्पू, चतुर्भुज अनोखे, कृपा तुम सब चौक पहुँचो मैं भी रोजनामचा में रवानगी डाल कर आता हूँ। अरे सब गये क्या। **सर पर से विंग उतार कर। अब कौन सा सीन है। डायरी निकाल कर पढ़ता है। बरूआ का।**

दृश्य : 7

तनेजा यू टेबिल के टर्न पर बैठा पाईप पीते हुए। टेबिल के दायें तरफ सुदर्शन चोपड़ा खड़ा हुआ है।

सुदर्शन आपको यह जानकर बड़ी खुशी होगी कि हमारी कम्पनी ने माक्रेट में अपने प्रॉडक्ट्स के इन्ट्रीड्यूज होने के एक वीक के अन्दर इस गरीब गुरबा वाले शहर में अपना दस हजारवां बल्ब बेच दिया। सब ताली बजाते हैं लेकिन तनेजा चुपचाप है। जो हमारे बेहतर टीम वक्र, और प्रोडक्ट की हाई क्वालिटी का सबूत है। फिर सब ताली बजाते हैं। इसके अलावा हम अपने प्रोडक्ट की पब्लिसिटी पर भी खास ध्यान दे रहे हैं और एडवर्टाईज डिपार्टमेंट के अलावा हमारा रीजन भी इसमें ऐसा कुछ कर दिखाना चाहता है। जिससे इस बल्ब की रातों रात सेल हो जाये और काश्मीर से कन्याकुमारी तक हर घर, हर इन्स्टीट्यूट और आर्गनाइजेशन में हमारे ही बल्ब जले और पूरे इस बल्ब के बल पर हम पूरे हिन्दुस्तान में एकता कायम कर सकें।

बरूआ इट्स ग्रेट सर। मतलब इस साल का नोबल अवार्ड हमारी कम्पनी के खाते में। तेज बोलने के कारण सुदर्शन की सांस फूल जाती है। वो ग्लास उठाकर पानी पीता है। सब मुस्करा रहे हैं।

सुदर्शन थैंक्स फार काम्प्लीमेंट्स। इससे ज्यादा खुशी की बात तो यह है कि जिस कस्टमर ने हमारा दस हजारवां बल्ब खरीदा था, वो हमारी कम्पनी के 140 घंटे तक बिना प्यूज हुए लगातार जलने के दावे को जांचने के लिए खुद 140 घंटे के लिए बैठ गया है और उसे बैठे बीस मिनट बाद 40 घंटे हो जायेगे। यह इन्सीडेन्ट हमारे पब्लिसिटी कैम्पेन को इनटेंस करने का सुनहरा मौका है। इसलिए मैंने एक माडल मिस रीता सिंह का उसके साथ फोटो सेशन भी करा कर मार्केट में भिजवा भी दिया हैं। इसके बाद एक छोटी सी एड फिल्म बनाने का भी आईडिया है। जरा इमेजिन कीजिये कि गिरजा बाबू और माडल मिस रीता काश्मीर की बर्फ़ीली वादियों में घूम रहे हैं। अचानक रीता गिरजा बाबू का हाथ पकड़ लेती



है। गिरजा बाबू सकपका जाते हैं। रीता उनके होठों को छूने की कोशिश करती है। तभी उनके बीच में होता है धमाका। हमारा महाबल्ब प्रज्वलित होजाता है। काश्मीर की बर्फ पिगलने लगती है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि यकीन है इससे हमारे प्रोडक्ट की सेल और ज्यादा बढ़ेगी। **तनेजा की तरफ देखकर** एनी डाउट सर।

तनेजा **सिगार फेंक कर** यू ब्लडी बगर, इडियट।

सुदर्शन सर सिगार में कोई खराबी थी।

तनेजा नहीं तुम्हारी आईडिये में है खराबी। मैं तुमसे कह रहा हू इडियट। **सुदर्शन चुप हो जाता है।** कहां तक पढ़े लिखे हो तुम।

सुदर्शन एम.बी. ए. फर्स्ट क्लास सर।

तनेजा एम....बी....ए....। मतलब माल बेच आना, मालिक को बेचा आना नहीं। कददू साला। बरूआ मार्केट जाओ और एक बड़ा सा कददू लाओं। किताबे पढ़कर डिग्री हासिल करना और बात है और मार्केट में प्रोडक्ट को सेल करना अनादरथिंग। मुझे देखो मैंने तो किसी कालेज से कोई डिग्री नहीं ली, फिर भी तुम सबका डायरेक्टर हैं। जमशेदभाई, लक्ष्मीभाई, धीरू भाई और मैं हमसे किसी ने किताबी पढ़ाई नहीं की। अगर की होती तो हम भी तुम्हारी तरह बेवकूफाना लफ्फाजी कर रहे होते।

सुदर्शन यस सर...लेकिन

तनेजा तुम्हें कितनी सैलरी देती है कम्पनी। टिवन्टी फाईव थाउजेण्ड यानी फाईव डिजिट में। तुम्हारा औकात से कहीं ज्यादा। इसका मतलब यह नहीं कि तुम अपने दिमाग को इस्तेमाल बन्द करके चवन्नी छाप आईडिये से सेल बढ़ाने पर वक्त बरबाद करो

सुदर्शन सर इससे तो हमारी सेल बढ़ेगी सर।

तनेजा यही तो मुझे हैरत है कि आप सभी को इतनी बात समझ में नहीं आ रही कि आप कम्पनी के बल्ब को नहीं बल्कि फैंक्ट्री को सेल करने की तैयारी में जुटे हैं। आप लोगों ने कभी सोचा है कि इससे क्या नुकसान हो सकता है **सब एक इसकी तरफ दिखते हैं। तनेजा।दूसरा पाईप सुलगाकर** अगर वो बल्ब प्यूज हो गया तो **खामोशी** अगर वो बल्ब प्यूज हो गया ? तो यह कम्पनी बैठ जायेगी। प्रोडक्शन बन्द हो जायेगा। यह सोचा आप में से किसी ने ? अरे मैं तो व्यापारी हूँ, मैं तो मँगफली का ठेला लगा लूँगा, ले मँगफली ले, ले मँगफली ले , लेकिन तुम किसी बनिये की दुकान पर मुंनीमगिरी भी नहीं कर पायेंगे। **दर्शकों से भाई** साहब आप लोग इन्हें काम देंगे। देंगे, तो आपका हाल भी हमारी तरह हो जायेगा। तो अब जाईए और उस आदमी को वहां से उठाइये किसी भी कीमत पर। समझे। किसी भी कीमत पर। गेट आउट फ्रम हेअर। कददू साला।

बरूआ सर

तनेजा यू आल सो कददू गेट आउट।

दृश्य : 8

**ए.बी.सी. कम्पनी के डायरेक्टर आठ दस लोगों के साथ मीटिंग में व्यस्त। सभी लोग मिस्टर कैरोना की बात सुन रहे हैं।**

कैरोना अगर आपको इनफार्मेशन सही है तो अब आप यह समझिए कि ए.बी.सी. के प्रोडक्ट को मार्केट में निकलने से कोई नहीं रोक सकता।। बस, कैसे भी उस कस्ट्यूमर को वहां बैठने पर राजी कीजिए, मेरी बात समझे आप। हर कीमत पर उस कस्ट्यूमर को वहां बैठाना होगा , तभी हमारा सपना साकार होगा। बस उसे किसी भी तरह वहाँ बैठे रहने पर मजबूर करना होगा , क्यों अब्बास तुम्हारी क्या राय है ?

अब्बास सर अब मैं क्या राय दे सकता हूँ कहाँ आप हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के ग्रेज्यूट और कहाँ मैं कारस्पान्डेंट कोर्स से पढ़ा हुआ।

कैरोना अरे यार पढ़ना अलग बात है। मार्केट में प्रोडक्ट बेचना अलग बात। हार्वर्ड में हमें पढ़ाया गया है कि एस्किमों को फ्रिज कैसे बेचें। अब मैं यहाँ एस्किमों को कहाँ ढूँँ। इसलिये

सोचो यार, सोचो.....एक काम करो एक आध सिगरेट पी लो , शायद कोई आईडिया आ जाये ।

अब्बास परेशान सा इधर उधर ठहलता है। दिवाकर चाय लेकर आता है। कैरोना उसे देखकर।

दिवाकर अरे साहब के पेट में दर्द हो रहा है, रुकिये मैं चाय में तुलसी के फूल का रस मिला कर लाता हूँ चाय रख कर जाता है।

अब्बास तुलसी का फूल वो भी चाय में , हूँ .....

कैरोना यूरेका। यूरेका। मिल गया। अरे यार दिवाकर तुम तो कमाल की चीज निकले , क्या आईडिया दिया है थोड़ी देर रुक कर आप एक काम करें आप उस कस्ट्यूमर को एक बुके ले जाकर दो।

अब्बास कस्टमर को बुकें सर ? आय एम नाट अन्डरस्टैण्ड सर।

कैरोना जी हॉ वो कस्टमर के लिए बुके जरूर होगा लेकिन इक्लिप्स कम्पनी के लिए रीथ साबित होगा। अरे जाओ उसे मुबारकबाद दो, उसका दिल जीतो उससे कहो कि आपने यहां इस तरह बैठकर बहुत अच्छा काम किया, वगैरह वगैरह। अपने कान्टेक्स तलाशों , फोटोग्राफरों को पटाओ, दो तीन जर्नलिस्ट से उसकी खुशामद में दस बीस लाईन का आर्टिकल लिखवा कर छपवाओं। कामन मैन इतने में ही खुश हो जाता है। फिर, बस तुम देखना कि वो बल्ब इसी बीच में 140 घंटे के अंदर ही प्यूज हो जायेगा।

अब्बास लेकिन इक्लिप्स का दावा है कि.....

कैरोना ये दावा वो अपनी लैब के अंदर अपने तयशुदा कंडीशन पर करते हैं। कस्टमर के घर पर नहीं, यही तो देखना है। हो सकता है कि 24 घंटे में ही बल्ब प्यूज हो जाये। अच्छा अब्बास तुम फौरन उस कस्टमर से कान्ट्रैक्ट करो।

अब्बास तो सर मैं चलूँ ?

कैरोना अब चाय तो पूरी करते जाओ, जरूरत पड़ने पर मुझे फोन कर लेना अब्बास चाय एक ही घूँट में पी लेता है। ओ के , बेस्ट आफ लक।

दृश्य : 9

पीयूष अंदर दाखिल होता है। सूत्रधार सम्पादक महोदय की तरह बैठे हुए हैं।

पीयूष मैं अंदर आ सकता हूँ सर।

संपादक हॉ हॉ आओ मेरे हरे गुलाब , मेरी जान, पीयूष भाई।

पीयूष नमस्ते सर।

संपादक अरे हॉ सुनाओ

पीयूष सर मैंने यह एक रिपोर्ट तैयार की है। यह देखिए सर।

रिपोर्ट देता है , संपादक पढ़ना शुरू ही करता है। तभी टेलीफोन की घंटी बजती है।

संपादक दैनिक समाचार पत्र दिनो दिन डूबती दुनिया से ....से संपादक तिवारी.....नमस्ते श्रीमान जी हॉ.....नहीं श्रीमान, लेकिन मैं फिर भी मटेरियल को खुद चेक कर लेता हूँ .....कब आज के .. पेज नंबर पांच....पीयूष से पेज नंबर पांच खोलना....जी हॉ सर, इसमें तो उस कंपनी के स्ट्राइक के बारे में छपा है। जी ये बयान तो कंपनी के यूनियन लीडर का है जो उसने सभी न्यूज पेपर में सर्क्यूलेट किया होगा। श्रीमान इसमें से तो हमने अपनी तरफ से कुछ भी नहीं लिखा....जी इस कंपनी से विज्ञापन ....यही कोई हर तीसरे दिन मिलते रहते हैं ....अब श्रीमान ये न्यूज हमने इंटरनेशनली तो नहीं छापी....ठीक है श्रीमान भविष्य में इसका ध्यान रखा जायेगा। फोन रखता है। सहज होकर हॉ बोलो पीयूष तुम कुछ कह रहे थे ?

पीयूष सर कल रात मैं चौक मैं घूम रहा था, उसी की रिपोर्ट तैयार की थी।

संपादक हॉ...ये फोन के चक्कर में पढ़ना भूल गया....रिपोर्ट देखकर ओट्टोगिकरण....बहुराष्ट्रीय कंपनियां.. ..विश्व बैंक...उपभोक्तावाद....आम आदमी.....हंसता है तुमने रिपोर्ट तैयार की है या उपन्यास लिखा है उपभोक्तावाद पर।

- पीयूष सर ये कोई छोटी घटना नहीं है बल्कि ये वो धुआँ है जो ज्वालामुखी फटने का आभास दे रहा है।
- संपादक पीयूष, ये खबर तुम्हारे, मेरे लिए तो महत्व की हो सकती है, लेकिन आम आदमी के लिए नहीं और थोड़े बहुत जो इसको जानना भी चाहते हैं, उनकी संख्या कितनी है, दस, बीस, सौ, हजार लाख या सिर्फ करोड़। आम आदमी चाहता है फिल्म अभिनेत्री का प्रेम प्रसंग या क्रिकेट के सटटे की खबरे। सरकारी कर्मचारी पढ़ना चाहता है डीए की खबर। बिजनेस के लोग कोई स्कैम। राजनैतिक लोग दलबदल के बारे में। टेलीफोन की तरफ देखकर अभी देखा नहीं, किसी कंपनी में स्ट्राइक हुई, वहां के यूनियन लीडर ने एक बयान दिया हमने रूटीन में उसे क्या छाप दिया कि हमारी रोजी रोटी के लाले पड़ गये। अरे इन्हीं पूंजीपतियों के बल पर हम जिंदा हैं। ये मशीने आवाज कर रही है। हाकर सड़कों पर दौड़ लगा रहे हैं.... ये विज्ञापन न दे तो हमें ताले डालना पड़ेंगे प्रेस में।
- पीयूष लेकिन सर ये लड़ाई इन्हीं पूंजीपतियों के लुभावने उपभोक्तावाद के विज्ञापन से ही शुरू हुई है।
- संपादक पीयूष, सुनो मेरी जान, मैं भी जब यहां आया था तो तुम्हारी तरह ही बहुत जोश के साथ आये थे, लेकिन अब समझ में आया कि खाली पेट की सिर्फ सिद्धान्तों के सहारे नहीं भरा जा सकता। इसके लिए अपना ज़मीर भी गिरवी रखना पड़ता है। इसलिए बेहतर होगा कि तुम किसी सरकारी भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करो या और कुछ....और अगर इसी विषय पर ही कुछ करना है तो उस कंपनी के प्रोडक्ट की विशेषताओं का बखान करो।
- पीयूष लेकिन इसमें आम आदमी का क्या फायदा और खास तौर से वो, जो उनसे लड़ने बैठा है।
- संपादक अरे मेरी जान, बँदी के लड्डू तुम्हारे लेख लिखते ही वो आम कहां रह जायेगा, खास हो जायेगा। और तुम देखना कि लोग कैसे उसकी खुशामद करते हैं। रही जनता की बात तो वो इस पर अपनी राय अपने तरीके से बता देगी। अब याद करो कि पिछली बार इलेक्शन में एक पार्टी सड़ से प्याज के मसले पर हार गई। वहीं दूसरी पार्टी उबड़ खाबड़ रोड की वजह से। अरे काम ऐसा करो कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।
- पीयूष इस रिपोर्ट का क्या करू सर
- संपादक इसे वो नुक्कड़ पर पान वाले को देदो। वो रोज पान लपेट कर भेजेगा और हम इसे पढ़ कर अपनी शब्दावली का विकास करते रहेंगे। अबे जल्दी करो, मुझे अगले रोल की तैयारी कर लूँ
- पीयूष अर्थपूर्ण दृष्टि से समझ गया सर।

दृश्य : 10

- दुकान से बाहर गिरजा बाबू बैठे हुए। आस पास पुलिस वाले खड़े लोगों की भीड़ गिरजा बाबू को देखती हुई। कुछ खोमचों वाले, ठेलेवाले भी दुकान के आस-पास। मेला जैसा माहौल। पुलिस वाले दुकान के कोने में बैठे ताश खेल रहे हैं। उनमें से एक मँगफली वाले के पास जाकर।
- दुकानदार मूँगफली कैसी दी।
- मँगफलीवाला 2 रु. छटाक बाबू जी।
- दुकानदार 2 रु तो बहुत बोल रहे हो। ठीक है, पाव भर मँगफली दे दो।
- मूँगफलीवाला पाँव भर तो नहीं निकलेगी। 100 ग्राम के करीब है।
- दुकानदार तो फिर इतना बड़ा ठेला लिए क्यों घूम रहा है।
- मँगफलीवाला मँगफली तोलता हुआ अरे बाबूजी सूबे के टेम 16 किलो मँगफली डालकर चला था, सेकेंड शो तक की फुर्सत। पर क्या पता है यहां महाबल्ब के चक्कर में फर्स्ट शो के पहले ही बाजार साफ हो जायेगा। अभी मंगाई है मौड़ा से, आता ही होगा लेकर मँगफली बांधकर अभी तो आप ये ले जाओ। और आती है तो लाता हूँ।
- इसी बीच में कार की आवाज आती है। सुदर्शन उतरता है।
- दुकानदार अरे आईये साहब आईये। मँगफली खाईये। वो मेरे दामाद की डीलरशिप।

सुदर्शन      हाँ हो काम हो जायेगा। गिरजा पास आकर अरे गिरजा बाबू नमस्कार कैसे हैं आप। अरे आप की तबीयत तो ठीक नहीं लग रही है आपको मालूम है आपको बैठे हुए 43 घंटे हो चुके हैं पूरे। अब बल्ब को तो आपने देख ही लिया। आप समझदार आदमी हैं। मेरी माँ कहा करती थी कि यह देखना हो कि चावल पूरे पके या नहीं इसका पता तो एक चुटकी चावल खाकर ही पता चल जाता है। इसका मतलब तो यह नहीं कि आदमी पूरा भगौनी ही खा जाये। मेरा मतलब है कि आप चखने और खाने का डिफरेंस तो समझ गये होंगे।

दुकानदार      समझगये। समझ गये।

गिरजा बाबू दूसरी तरफ मुँह कर लेते हैं। तभी चाय वाला लड़का चाय लेकर आता है।

चायवाला      बाबू जी 156 रुपये हो गये। अभी देंगे या बाद में।

सुदर्शन      एक सौ छपपन रुपये। किसने खाया पिया इतना।

चायवाला      साहब आप ही तो कह कर गये थे कि इस टपोरी को खाने पिलाने में कोई कसर मत रखना।

गिरजा बाबू टपोरी के संबोधन पर चायवाला को गुस्से से देखते हैं। इसी बीच में ए.बी.सी. कंपनी का अब्बास भी कार से आता है।

सुदर्शन      ठीक है चुप रहो। तुम बकवास बहुत करते हो। पर्स निकाल कर ये लो अपने पैसे..। और सुनो अब कोई चाय वाय नहीं आयेगी। समझें।

चायवाला      जी।

सुदर्शन      कुछ समझो या नहीं।

चायवाला      नहीं बाबूजी आ गया समझ में, कि आप की बैट्री डाउन हो गई।

सुदर्शन      शट अप। तुम बहुत बकबक करते हो। सुनो ये चाय भी वापस ले जाओ। अब कुछ मत लाना।

अब्बास      और जाकर बाबूजी के लिए कोल्डड्रिंक ले आओ।

सुदर्शन      अब्बास को देखकर हूँ ....तो यह सब आपके इशारे पर हो रहा है।

अब्बास      अभी इशारे देखा कहा है आपने। थोड़ा सा इन्तजार कीजिए। फिर आप की जगह वहां होगी एक कोने में इशारा करता है। जहां एक फकीर बैठा है।

दुकानदार      पन्द्रह साल से इधर उधर घूम रहा था। जबसे ये यहाँ बैठे हैं, तब से वो भी यही आकर पड़ गया।

सुदर्शन      गिरजा बाबू से देखिए मिस्टर किसी के कहने में आकर आप हमारा और अपना वक्त बरबाद मत कीजिए। आप चाहे तो हम बल्ब का पूरा एक कार्टून आपको भिजवा दे।

अब्बास      अरे आप बैठे रहे तो मैं एक दर्जन कार्टून अपनी कंपनी के बल्बस को भिजवा दूँगा।

सुदर्शन      अब्बास से आप से बात नहीं हो रही। गिरजा बाबू से सुनिए गिरजा बाबू आप चाहे तो हजार पांच सौ रुपये ले ले लेकिन अब आप उठ जाये।

अब्बास      देखिए आप बैठे रहे तो मैं आपको हजार रुपये प्रतिदिन की दर से भुगतान करने को तैयार हूँ।

सुदर्शन      देखिए आप बीच में मत बोलिए।

अब्बास      मैं भी आपसे बात नहीं कर रहा हूँ।

सुदर्शन      ए यू ब्लडी बगर, स्काउन्डल,

दुकानदार      अरे भगवान यह मेरी दुकान के सामने हंगामा मत करो।

इसी बीच में वहां भीड़ लगने लगती है पुलिस वाली अपनी यूनीफार्म सही कर दोनों को पकड़ते हैं। मँगफली वाला भी वहां आ जाता है।

सुदर्शन      आप एक कस्टमर को बहका रहे हैं।

अब्बास      बहका आप रहे हैं। कस्टमर को कन्वेंस करने जितना अधिकार आपका है उतना ही हमारा भी।

सुदर्शन	गिरजा बाबू की तरफ देखकर आप इन लोगों की बातों में न आईए मैं आपको मुँहमांगी रकम दूँगा।
मूँगफली	मूँगफली वाला आगे आकर सुदर्शन से। इसी बीच अब्बास कोने में चला जाता है। ये-ये रूपयें की धौंस किसी और को दिखाना। साला उसे उठाकर हमारे पेट पर लात मारेगा। चल फूट इधर से। वो सौलह किलो मूँगफली मंगवाई है, उसका पैसा कौन देगा। चल आगे बढ़। गिरजा बाबू के पास जाकर आप बैठो बाबूजी आप बैठो इधर ही, इधर ही बैठो रोते हुए अरे आप के कारण इधर हमारा जोरदार बिक्री हुआ। 16 किलो मूँगफली तो हम एक हफता में नहीं बेच पाते थे। आंसू पोछकर आप यह जो भीड़ देख रहे हैं न, यह सब आपकी वजह से है। लोग आ जा रहे हैं और मूँगफली खा रहे हैं। वो देखिये उधर झूले लग गये और उस कोने में चाट के ठेले खड़े हो गये हैं। यह पूरी रेलमपेल आपकी वजह से है। आप की वजह से कम से कम पचास घर चल रहे हैं। आपको किसी चीज की जरूरत हो तो हमको बोलना हमारा ठेला इधर कोने में खड़ा है। चायवाले को आवाज देकर ऐ बाबूजी के लिए चाय भेज स्पेशल गोल्डन मूँगफली ठेले पर चला जाता है मंदा अपने बच्चों के साथ टिफिन में खाना लाती है। मास्टर गिरजा बाबू टिफिन खोलते हैं और बड़े प्रेम से खाना खाने लगते हैं। तभी अब्बास कुछ समोसे कचौरी लेकर गिरजा बाबू के पास आता है। गिरजा बाबू उसे इशारे से खाने का डब्बा दिखाकर समोसे खाने से मना कर देते हैं।
अब्बास	गिरजा बाबू आप के लिये फल लाया हूँ
गिरजा	जरा साने से हट जाईये। आप बहुत बेशर्म आदमी है।
अब्बास	बच्चों ले लो। बच्चें नहीं लेते। दुकानदार आकर उसमें से कुछ फल चखता है। अन्धकार।
दृश्य : 11	
न्यूज रीडर	टीवी नुमा फ्रेम पर प्रकाश उभरता है। उसमें सूत्रधार भगता कौपता हुआ अन्दर आता है तथा न्यूज रीडर की तरह समाचार का वाचन करने की तैयारी करता है। नमस्कार ! मैं ईगल टीवी से आप से मुखातिब हूँ जो खबरो पर नज़र रखे दूर से। आज का महत्वपूर्ण समाचार है कि देश की प्रतिष्ठित बिजली उपकरण बनाने वाली कंपनी इक्विप्स के एक उत्पाद महाबल्ब के संबंध में किये गये वादे को जांचने के लिए एक उपभोक्ता बैठ गया है। इक्विप्स कंपनी ने अपने द्वारा तैयार किये हुए महाबल्ब के संबंध में दावा किया था कि यह बिना फ्यूज हुए लगातार एक सौ चालीस घंटे तक जल सकता है। उपभोक्ता ने एक सौ चालीस घंटे तक दुकान पर ही बल्ब जलाकर देखने का निर्णय लिया और बैठ गया। अभी तक उसे बैठे 72 घंटे गुजर चुके हैं। इस संबंध में देखिये एक रिपोर्ट। प्रकाश दूसरे कोने पर उभरता है। जहाँ गिरजा कुमार बैठा है। वो अपना इन्टरव्यू दे रहा है।
नीति	थैंक्यू संजय। मैं नीति श्रीवास्तव आप सभी दर्शको का हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ
न्यूज रीडर	नीति क्या आप मुझे सुन रही है।
नीति	हाँ संजय।
न्यूज रीडर	तो ध्यान रखे कि आप फैशन परेड में नहीं आई है।
नीति	तो दर्शको मैं बता दूँ कि हम पहुँच चुके उस दुकान पर, जहाँ एक मशहूर कम्पनी के बल्ब के लिये किये गये दावे को जांचने के लिये एक कस्टमर बैठ गया है। आप को दिख ही रहा कि यहाँ पर एक उत्सव जैसा माहौल है। सब जगह झूले, खोमचे लगे हैं। भीड़ इतनी है कि लोगों को आने जाने में भी दिक्कत हो रही है। और इस कोने में हमारे पुलिस कान्स्टेबल मुस्तैदी से तैनात हैं अपनी ड्युटी में। बल्ब का क्लोज अप ले लेना। आपका नाम। दुकानदार बीच में कूदता है। सिपाही उसे अलग हटाता है।
पंछी	अरे यह नहीं है। वो रहे मास्टर साहब।
मंदा	बाबू गिरजा प्रसाद मास्टर। गिरजा उसकी तरफ घूर कर देखता है। वो दाँतों के बीच जीभ दबा कर माफी मांगने का प्रयत्न करती है। अपनी लड़की को आवाज देकर। ऐ मुन्नी इधर आ न। मुन्नी आती है। बाल तो सही कर ले अपने।

- नीति तो आप है गिरजा बाबू जिन्होंने इस बल्ब के दावें को जाँचने का फैसला किया है। गिरजा सिर हिलाता है। ये फैसला आपने किसके के कहने पर किया है। गिरजा जवाब नहीं देता है। गिरजा बाबू ये बताईये कि आपने ये फैसला किसके कहने पर किया है ?
- गिरजा स्वप्रेरणा।
- नीति आप स्वप्रेरणा से यहाँ बैठे है ? मतलब इतनी भाग दौड़ भरी जिन्दगी में इतना वक्त है आपके पास।
- गिरजा हम में से किसी को तो बिल्ली के गले में यह घण्टी बाँधना ही है।
- नीति आप किस व्यवसाय से जुड़े है ?
- मंदा कितनी बार कहा कोई ढंग का काम कर लो, लेकिन नहीं साहब ये धर्मराज तो सरकारी स्कूल में मास्टरी करेंगे पता नहीं कौन सा पुण्य कमा रहे हैं।
- गिरजा फिर घूर कर देखता है।
- न्यूज रीडर नीति आप मुझे सुन रही है। नीति। वहाँ क्या हो रहा है।
- नीति बहुत अच्छा सवाल पूछा है आपने, धन्यवाद। मास्टर गिरजा बाबू के इस प्रयास से कई सवालिये निशान पैदा हो गये हैं। जिनसे उपभोक्ता के इस कदम से औद्योगिक और तकनीकी कंपनियों में शीतयुद्ध छिड़ने की संभावना है। प्रशासन और पुलिस ने इस संबंध में आवश्यक ऐतिह्याती कदम उठा लिए हैं। गृहमंत्री महोदय ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए। स्वयं सुरक्षा व्यवस्था का अवलोकन किया। जनता द्वारा इस कदम की प्रशंसा की जा रही है।
- न्यूजरीडर धन्यवाद नीति। अब ये बताये कि मास्टर साहब चँकि सरकारी मास्टर है और स्कूल भी नहीं जारहे होंगे, तो स्कूल के बच्चों की पढ़ाई पर क्या असर पड़ रहा है।
- नीति संजय आपने बहुत ही अच्छा सवाल किया है। मास्टर गिरजा बाबू के इस कारनामों से जहाँ एक और मिडिल क्लास में जोश और उमंग है, वहीं ईगल टीवी ने एक बात नोटिस की है। मास्टर साहब चँकि 140 घण्टे बैठेंगे, इसलिये स्कूल में बच्चों की पढ़ाई पर विपरीत असर पड़ रहा है। परीक्षाएँ सर पर है। बच्चों रोज की तरह भारी भारी बैग लेकर स्कूल आ रहे हैं, पर निराश होकर घर लौट जाते हैं। पर मास्टर साहब इन सब बातों से बेपरवाह होकर अपने अभियान पर डटे हैं।
- न्यूजरीडर नीति आप मुझे सुन रही है।
- नीति जी हँ संजय।
- न्यूज रीडर तो धन्यवाद। नीति की आवाज भी साथ साथ आती रहती है। तो दर्शकों मैं नीति श्रीवास्तव अपने कैमरामेन चश्में खान के साथ आपको अपने स्टूडियो वापस ले चलती हैं तो ये थे आज के प्रमुख समाचार। आज के समाचार अब समाप्त हुए। अब लेंगे हम छोटा सा ब्रेक। हमारा अगला समाचार बुलेटिन कल रात 9.00 बजे प्रसारित होगा। नमस्कार। काव काव। दर्शकों से अब इतनी जल्दी जल्दी इन्टी करना पड़ी तो प्ले खत्म होते होते मेरा तीन किलो वजन कम हो जायेगा।
- अंधकार

दृश्य : 12

- प्रकाश उभरता है। दो अलग अलग वृत्त दिखाई देते हैं। एक में इक्विप्स कंपनी तथा दूसरी में ए बी सी के कर्मचारी मीटिंग करते दिखाई देते हैं।
- बरूआ सर यह है ईन्टरनेट पर निकाले गई इन्डेक्स और शेयर रिपोर्ट्स। यह है कोला कम्पनी, तीन रुपये के साथ उछाल पर। यह है स्टार कम्पनी दो रुपये पचास पैसे उछाल पर। और सब यह है हमारी नेशनल कम्पनी, इक्विप्स। एक रुपये नब्बे पैसे नीचे
- तनेजा व्हाट ? रिपोर्ट्स देखता है।
- तनेजा सुदर्शन से देख लिया आपने कि आपकी मूर्खता का क्या नतीजा निकला। मुझे तो अभी डाउट है कि आप ने उसे ढंग से कन्वेंस भी किया था या नहीं, आपने उसे आफर दिया था। यह क्या है। मैं पूछ रहा हूँ कि यह क्या है ?

सुदर्शन कददँ  
तनेजा और आप इसी तरह के कददू है। अच्छा यह बताईये कि आपने उसे आफर दिया था कि नहीं ?

अब्बास सर, सुदर्शन ने तो सर उसे अपने बल्बस भरा पूरा एक कार्टून देने को कहा, लेकिन मैंने भी हार नहीं मानी, ए.बी.सी. के बल्बस का पूरा ट्रक ही देने का वायदा कर लिया।

तनेजा ए.बी.सी. , ए.बी.सी., ऐ.बी.सी.। एक अदना सा आदमी आपके कस्टमर को आपके सामने बहकाता रहा और आप देखते रहे।

अब्बास उसने रोका तो मैंने भी बोल दिया कि कस्टमर पर जितना अधिकार तुम्हारा है उतना ही हमारा।

तनेजा ठीक है, उसे दस बीस हजार रुपये का लालच दो।

अब्बास सर मुझे नहीं लगता कि वो मान जायेगा।

तनेजा हूँ तो इसका मतलब यह हुआ कि वो आदमी अब वहां से नहीं उठेगा।

करोना गुड, तो अब्बास तुमने उस आदमी को उठने से रोक ही लिया दांत पीस कर लेकिन वो बल्ब अभी तक फ्यूज नहीं हुआ .....तो हम सब फ्यूज हो जायेंगे .....कुछ सोचो, सोचो, क्या हो सकता है अब्बास सोचो। सभी सोच विचार की मुद्रा में, बेचैनी, अचानक करोना के चेहरे पर भाव बदलते हैं अब्बास ऐसा नहीं हो सकता कि इलेक्ट्रिक सिटी बोर्ड के किसी आदमी को पटाया जाये और वो सप्लाई ही बन्द कर दे।

सुदर्शन सर इससे तो एबीसी वालों को कहने का मौका मिल जायेगा कि बल्ब फ्यूज होने के डर से सप्लाई बन्द करा दी गई।

अब्बास इससे तो इक्विप्स वालो को कहने का मौका मिल जायेगा, कि हम बिना करन्ट के बल्ब जलाने का दावा थोड़ी करते है।

तनेजा अब हमें उस बल्ब को प्यूज होने से रोकना होगा। बरूआ सबसे पहले तुम बोल्टेज को कंट्रोल करने के लिए कुछ बंदोबस्त करो, एम.सिल. या स्टेबलाईजर, जरनेटर, मिनिस्टर, प्राईम मिनिस्टर जो लगता है वो लगाओ। और सुदर्शन तुम इलेक्ट्रिक सिटी बोर्ड के सब स्टेशन में जाकर उन्हें पैसा दो, उनसे बात करो कि वो किसी भी कीमत पर सप्लाई जारी रखेंगे और वोल्टेज को कंट्रोल में रखे – हमारे लिए इस बल्ब का जलते रहना उतना ही जरूरी है जितने हमारे बदन के लिए सांस। अब हमें किसी भी हालत पर उस बल्ब को फ्यूज होने से बचाना है। समझे।

अब्बास हां ये हो सकता है सर कि हम सब स्टेशन पर जाकर वहां आदमी को इस बात के लिए राजी करें कि वो करंट में फलक्चुएशन पैदा करें। बल्ब दूसरे तीसरे झटके में ही जन्नत नशी हो जायेगा। और सर अगर ऐसे नहीं हुआ तो सर हम उस परटीकुलर दुकान की सफाई ही 5-10 सेकंड के लिए क्यों न गड़बड़ कर दें, मेरा मतलब उसे ही हाई बोल्टेज दे दें, तो वहां के सभी बल्ब प्यूज हो जायेंगे।

कैरोना लेकिन अगर दुकान पर अपनी कंपनी का बल्ब भी लगा हुआ तो।

अब्बास सर इसीलिए तो मैं कह रहा हूँ। इक्विप्स वालों ने पूरी दुकान में उनके बल्ब लगता दिये हैं और अपनी कंपनी का कोई बल्ब वहां नहीं लगा।

कैरोना गुड, ग्रेट आईडिया। ये भी हो सकता है। वो एक बल्ब की बात कर रहे थे, यहां सभी प्यूज हो रहे हैं, क्यों अब्बास।

सुदर्शन यह पासिबिल नहीं है,सर।

तनेजा काम डाउन। बैठ जाओ। मैं बल्ब की वजह से थोड़ा टेंशन में आगया हूँ अरे सब हो सकता है। इससे पहले कि ए बी सी वाले कोई हरकत करे, तुम सबसे पहले इलेक्ट्रिक सिटी बोर्ड के सब स्टेशन पर ट्राई करो और अगर वहां काम न बने तो साम दाम दंड वाली तरकीब पर अमल करो।

कैरोना तो ठीक है, अब डॉट वेस्ट द टाईम साम,दाम दंड भेद कुछ भी करो जाओ गो अहेड।

दृश्य : 13

कैरोना जग्गा के साथ बैठा है। जग्गा हेट, जीन्स, जैकेट, होलस्टर से सुसज्जित।  
जग्गा हां करोना कोहे को तुम करे रोना धोना।  
कैरोना के चेहरे से स्पष्ट है कि कैरोना का यह संबोधन अच्छा नहीं लगा।  
कैरोना दर असल जग्गा मामला.....  
जग्गा संगीन है, अरे तभी न बुलाओगे हमको वैसे भी आंगे पोगे को उलटाने से हमारी बेइज्जती होती है, मालूम न। हां तो बकरे का पता बता।  
कैरोना दर असल वह बकरा.....  
जग्गा टाईम खतरनाक है, लेकिन जग्गा से कम, बोली  
कैरोना मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम्हें कैसे बताऊँ  
जग्गा टाईम खोटा नहीं करने का। एक दो क्लायंट से और भी मिलने जाना है। वो तो तुम हमारे पुराने क्लायेंट हो। इसीलिए तुम्हें प्रीयारिटी दी, वरना तुम्हारा नंबर तो अगले फाईव ईयर प्लान में आने वाला था।  
कैरोना दर असल जग्गा एक आदमी को नहीं बल्कि एक बल्ब को पूज करना है।  
जग्गा हा हां जोर से हंसता है।  
कैरोना तुम हंस रहे हो यार, लेकिन उस बल्ब की वहज से हम सबे की जान आफत में आ गई है। कैसे भी उस बल्ब को उड़ाना है, हम मुंह मांगा पैसे देंगे तुमको, लेकिन उस बल्ब को या तो पूज कर दो या उड़ा दो।  
जग्गा गोली से। ठीक है दो हप्ते बाद काम हो जायेगा।  
कैरोना दो हप्ते बाद नहीं, अभी दो घंटे के अंदर, नहीं तो हम सबका राम नाम सत्य हो जायेगा।  
जग्गा देखो राम नाम तो सत्य ही है और अगर तुम्हारे कहे मुताबिक सत्य करना हो तो रकम दुगुनी हो जायेगी।  
कैरोना मंजूर....मैं तो मुंह मांगी रकम देने को तैयार ही हूँ। अब्बास की तरफ देखकर अब्बास इन्हें पैसा दे दो।  
अब्बास नोटों से भरा ब्रीफकेस खोलकर दिखाता है। जग्गा उठाता है। और जाते हुए।  
जग्गा तो बस ठीक दो घंटे में तुम्हारा काम हो जायेगा। जाता है। सब खुश हो जाते हैं  
दिवाकर सर शैम्पेन मंगवाऊँ, अब तो काम हो ही गया समझिए।  
कैरोना बेवकूफी मत करो, कल भी तुम्हारे चक्कर में तेईस सौ रुपये की दारु उड़ा दी।

दृश्य : 14

दुकानदार आते जाईये। अरे पंछी सबको लाईन में लगवा। दो दो रुपये दर्शन शुल्क। लाईन में आईये। अरे बिना माला के। ऐसे थोड़े दर्शन होते हैं। उस काउन्टर से माला ले लीजिये। और आप को लौभान, धूपबत्ती जो भी जलाना हो, दूसरे काउन्टर से लेले। चादर चढ़ाना हो तो तीसरे काउन्टर पर चले जाईये। सभी धर्मों के धर्मगुरु यहाँ अपनी पूजा पद्धतियों के अनुसार उपरवाले से बल्ब जलने की कामना कर रहे हैं। शरबत का इन्तजाम उधर है। इसके बाद भजन का कार्यक्रम इधर होगा और उधर कव्वाली का। इसके बाद भोज का आयोजन भी किया गया है।  
गाना जिसके प्रकाश के समक्ष चन्द्र रवि सकुचायें  
जिस घर में हो महाबल्ब, वो अमर हो जायें।  
न टूटेगा, न फूटेगा, यह इतिहास रचेगा।  
जिसके नूर के आगे चॉन्द आफताब शरमायें  
जिस घर में हो, महाबल्ब वो अमर हो जायें।  
न टूटेगा, न फूटेगा, यह तारीख लिखेगा।  
इस बल्ब में बड़े बड़े गुन



इसमें लगे न कभी घुन  
फयुज न होगा जलता रहेगा  
न टूटेगा, न फूटेगा, यह इतिहास रचेगा जलेगा।  
न टूटेगा, न फूटेगा, यह तारीख लिखेगा।  
है रोशनी का ये खजाना, दीवानो को करे दीवाना  
आँधी तूफान कुछ न कर पाये।  
नदिया इस कभी डूबा न पाये।  
न टूटेगा, न फूटेगा, यह इतिहास रचेगा जलेगा।  
न टूटेगा, न फूटेगा, यह तारीख लिखेगा।

भगवान आप लोग अपने धर्मों के अनुसार प्रशाद और तबररुक लेते जाये। हिन्दु लोग को चने चिरोजी और मुसलमानों के लिये बताशा का इन्तज़ाम है। कन्यायें के लिये भोज का इन्तज़ाम है।

व्यक्ति क्यों उनके लिये बताशा। तुष्टिकरण।

दुकानदार अबे चुप्प।

सूत्रधार जग्गा एक ड्रम के सहारे लुढ़कता हुआ बल्ब को ठिकाने लगाने आता हुआ नजर आ रहा है। जग्गा ने ड्रम खड़ा किया और उस पर खड़े होकर बल्ब का मुआयना किया। उसके हाथ में बंदूक और सीढ़ी है। छत पर वो विजय ट्रेडर्स पर टेलीस्कोप के निशाने में लेकर उसने अपना घोड़ा दबाया, पर ऐसा लगता कि बिल्डिंग पर रहने वाले कबूतरों में से किसी कबूतर ने उसकी नाक पर बीट कर दी है। उसका निशाना चूक गया है। वह ड्रम के अन्दर वापस घुस गया है। और जो तरफ हो रहा है। उसे आप स्वयं देख ले।

**शोर मचता है।**

व्यक्ति 1 अरे इधर से गोली चलने की आवाज आई थी।

व्यक्ति 2 नहीं नहीं उधर से, उनके मुहल्ले से चलने की आवाज आई थी।

दुकानदार अरे मुझे तो बुर्केंवालिये भागती दिखी थी।

व्यक्ति 1 और बाटों बेटा बताशे।

व्यक्ति 2 अरे यह लिफाफा। **खोलता है।** सुन बेटा जयराम,

दुकानदार हाँ बेटा बोल। क्या बधाई संदेश आया है। कहीं से।

व्यक्ति 2 बधाई हो। तू आजकल बल्ब के कारण बड़े पैसे बना रहा है। कल काली टेकरी के सामने चुपचाप दस लाख ले आना, नहीं तो तेरा राम नाम सत्य हो जायेगा। **दुकानदार बेहोश हो जाता है।**

**दृश्य : 15**

टीवी नुमा फ्रेम पर प्रकाश उभरता है। उसमें सूत्रधार अन्दर आता है तथा न्यूज रीडर की तरह समाचार का वाचन करने की तैयारी करता है।

न्यूजरीडर नमस्कार। मैं पैंथर टीवी में आपका स्वागत है। पैंथर टीवी जो खबरो के पीछे दौड़े सबसे तेज। मेरे साथ है मेरी सहयोगी देबें

महिला रीडर आज पूरे देश में महाबल्ब प्रकरण की चर्चा होती रहीं। हमारे साथ इस समय मौजूद है उपभोक्ता मंच के अध्यक्ष एक वृत्त उभरता है। उसमें एक सज्जन बैठे दिखाई देते हैं। तथा सटटा किंग

अध्यक्ष यह हमारे द्वारा की जा रही वर्षों की मेहनत का परिणाम है कि उपभोक्ता को सद्बुद्धि प्राप्त हो गई तथा वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गया है। **प्रकाश पुनः न्यूज रीडर पर आता है।** वहीं जांच के लिए बैठे उपभोक्ता बाबू गिरजा प्ररसाद मास्टर ने इस कदम को स्वप्रेरित और आवश्यक बताया है। वैसे आप की क्या राय है बल्ब के बारे में।

सटटा किंग हमारी अक्खा लाईफ में पेलली बार इतना बड़ा कारोबार देखा। हम देखा किफ्रेट में, इलेक्शन में, दंगे में पर बल्ब के वास्ते, भीषण सटटा, मार्केट में पैर रखने का जगह नहीं

है। यूएसए, यूएई से लेकर यूरोप तक जापान से लेकर ताईवान तक, सब जगह से क्वीन से लेकर कबूतर तक सटटा लगाने के पीछे पड़े। अपनी कन्टी का लोग भी पीछे नहीं है, बच्चें , बूढ़े, बाईया सब सटटा खेल रहे हैं बल्ब पर।

न्यूज रीडर

धन्यवाद। आज का महत्वपूर्ण समाचार है कि आज बल्ब पर किये गये हमले के कारण इक्लिप्स कंपनी ने आरोप लगाया है कि यह उसके खिलाफ गंभीर साजिश है जो कि विदेशी पूँजीपतियों द्वारा रची हुई है। स्वदेशी कंपनियां भी इस मामले में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। इक्लिप्स कंपनी के महाबल्ब को अभी तक जलते हुए 120 घंटे बीत चुके हैं। इक्लिप्स कंपनी ने बल्ब को करंट फ्लक्चुएशन आदि से जहां बचाने के लिए आधुनिक तकनीक का प्रयोग शुरू कर दिया है वहीं पूजा पाठ का सहारा भी लिया जा रहा है। महाबल्ब की आरती भी दोनों समय उतारी जा रही है। सटटा बाजार में बल्ब को लेकर करोड़ों रुपये का सटटा लगाया जा चुका है। बताया जाता है कि सुरक्षा एजेंसियों ने प्रकरण में विदेशों में हो रही हलचल से प्रधानमंत्री कार्यालय को अवगत कराया है। प्रधानमंत्री कार्यालय से राज्य शासन को प्राप्त फ़ैक्स संदेश के बाद ही सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी गई है। कल गृह मंत्री मौके का मुआयना करेंगे। नमस्कार। हमारा अगला समाचार बुलेटिन कल रात 900 बजे।

दृश्य : 16

पंछी            ऐ हम बता रहे जयराम, दुकान से बाहर मत निकलना। अब के तो बच गये हो। समझे। और गिरजा बाबू आप, आप भी अपना मुँह हाथ धो लो। टोकनी के बाहर हवा खाये पान के पत्तों की तरह दिख रहे हो। मंत्री जी आरहे हैं। हमारी नौकरी बचाना। **मंत्री का प्रवेश।**

पंछी            आईये सर। यह दुकानदार। यह गिरजा बाबू

मंत्री जी      ठीक है, ठीक है। यह सड़क के गड्ढे साफ साफ दिखाई देते हैं, कैमरो में। इन्हें भरवाईये। पूरी दुनिया को दिख रही है हमारी सड़क। और यह जो सड़कों पर दुकानों का अतिक्रमण दिख रहा है, इसे भी हटाओं। डाक्टर स्वर्गवासी। मेडिकल चेकअप। अरे मेरा नहीं, उधर।

डाक्टर        गिरजा बाबू से। मुँह खोलो, जुबान दिखाओं।

मंत्री        अरे इनका नहीं, बल्ब का। यहाँ आने जाने वाले पर कड़ी नजर रखो कि कोई भी व्यक्ति विस्फोटक सामग्री लेकर बल्ब के पास न जा सकें। इटस क्लीयर।

डाक्टर        गिरजा बाबू आपकी वजह से पूरी लॉ एण्ड आर्डर सिचुएशन गड़बड़ा गई है। मेरी कुरसी को कुछ नहीं होना चाहिये।

मंत्री        डाक्टर, मुझे हर घण्टे पर मेडिकल रिपोर्ट चाहिये। टेम्प्रेचर, ब्लडप्रेसर, टेम्प्रेचर, ब्लडप्रेसर। समझे। अरे सुनो यह कान पर क्या लगा रखा है।

डाक्टर        सार्स और बर्डफ्लू से बचाव।

मंत्री        तो यह हमारे लिये जरूरी है। अच्छा क्या नाम है तुम्हारा और इन्तजाम है तुम्हारा।

पंछी            आरक्षक पंछी लाल। सर बल्ब की दोनों टाईम आरती करवा रहे हैं।

मंत्री        और अगर बल्ब माईनारिटी का हुआ तो ? क्या चुनाव हरवाओगे ? सुनो बल्ब के आसपास बुलेट पुफ़ शीट्स लगवाओं। यहाँ एक मेटल डिटेक्टर रखवाओं। वो सामने वहाँ बेरीकेडस लगवाओं, ताकि कोई बल्ब को काले झण्डे न दिखा सकें। इटस क्लीयर।

पंछी            यस सर।

मंत्री        हिन्दी में।

दृश्य : 17

न्यूज रीडर

नमस्कार। ईगल टीवी में आपका स्वागत है। खबरों पर नजर रखे दूर से। आज अभी पूरे देश में महाबल्ब प्रकरण छाया रहा। जहाँ एक और महाबल्ब प्रकरण से सटोरिये चाँदी काट रहे हैं, आतंकवादियों ने भारतीय कम्पनियों के इस स्वदेशी आन्दोलन को झटका देने का प्रयास किया। जिसका स्थानीय पुलिस ने सजगता दिखाकर उनके हमलों का करारा जवाब दिया है। तो लीजिये हमारी संवाददाता नीती श्रीवास्तव की रिपोर्ट

- नीति धन्यवाद संजय। जैसा कि आपको पता ही चल गया है कि आज बल्ब पर आतंकवादियों ने हमला किया, वहीं अपराधी गिरोहो ने दुकान के मालिक को जबरन फिरोती वसूली के लिये एक धमकी भरा पत्र भेजा है। लेकिन अभी तक किसी भी आतंकवादी दल ने कोई जिम्मेदारी नहीं ली है। वहीं अपराधी गिरोह की तलाश में कुछ पुलिस पार्टिया यूपी, बिहार और दिल्ली की तरफ रवाना हो चुकी है। आज महाबल्ब के आसपास सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी गई है। गृह सचिव ने बताया कि हम किसी भी संकट से निपटने के लिए तैयार हैं। महाबल्ब की सुरक्षा की कमान सेना द्वारा सम्हाल ली गई है। बल्ब को देखने वाले मेटल डिटेक्टर के बीच में से प्रवेश कर रहे हैं। बाबू गिरजाप्रसाद पूरी तरह से स्वस्थ एवं सुरक्षित है।
- न्यूज रीडर अब बल्ब की अवधि पूरी होने में कितना समय बाकी है।
- नीति बल्ब की अवधि 140 घंटे पूर्ण होने में कुछ पल ही शेष है। दूरदर्शन ने इसका सीधा प्रसारण करने का निश्चय किया है। अब निश्चित अवधि पूर्ण होने में कुछ ही पल शेष, तो हम यहाँ उपस्थित अपनी आडियन्स और लाईव आडियन्स के साथ मिल करते हैं काउन्ट डाउन। 10, 9, 8, 7, 6, 5, 4, 3, 2 एण्ड नाउ वन। बधाई ! चारों तरफ पटाखे की आवाजें और बधाईयां। मिठाईयां खिला रहे हैं। चारों तरफ जश्न का माहौल।
- न्यूज रीडर नीति .... नीति जी .... दर्शको क्षमा करे , नीति से हमारा सम्पर्क टूट गया है। इस तरह हमारे देश ने एक रिकार्ड काम किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री जो कि हमारे स्टूडियों में उपस्थित हैं, देश के लिए अपना संदेश प्रसारित करेंगे।
- टी. वी. पर प्रधानमंत्री आकर खड़े होते हैं।
- प्रधानमंत्री प्यारे देशवासियों। आप सभी को हार्दिक बधाई। जैसा कि आप सबको मालूम है कि हमारी पार्टी ने जो अपने घोषणा पत्र में औद्योगिक एवं तकनीकी नीति घोषित की थी, उसकी कीं विपक्षी दलों ने आलोचना की, लेकिन हम उन आलोचनाओं से विचलित नहीं हुए और अपने दृढ़ निश्चय पर डटे रहे। उसी का परिणाम है कि हमारी स्वदेशी कंपनी ने एक ऐसा महाबल्ब बनाया जो कि बिना प्यूज हुए लगातार 140 घंटे तक जल सकता है। और अभी भी जल रहा है। आज से हमारा देश सभी विससित और प्रगतिशील देशों के बीच आदर से देखा जाने लगेगा है। सभी देश चिन्तित थे कि हमारे देश ने इतनी प्रगति कैसे कर ली। खासकर अब हम विकसित देशों की मेहदबानी पर नहीं जी रहे। इससे थोड़ी ईर्ष्या होना स्वाभाविक है। परन्तु इस अवसर पर मेरे कार्यालय में देश विदेश से बधाई संदेश आ रहे हैं। विज्ञान की उन्नति तकनीक और सेटेलॉइट के जरिए सारे विश्व ने यह करिश्मा देखा है। मैं इस अवसर पर महाप्रदेश के मुख्यमंत्री प्रशासन एवं जनता को बधाई देता हूँ इसी के साथ इक्विप्स कंपनी को भी बधाई देता हूँ और वचन देता हूँ कि उन्हें देश के किसी भी कोने में अपनी फैक्ट्री निर्माण करना चाहे तो सरकार उन्हें यह भूमि मुफ्त उपलब्ध करायेगी। और जिस महाबल्ब ने हमारे देश का मस्तक उंचा कर दिया, जिसके कारण सम्पूर्ण विश्व के औद्योगिक, विकसित एवं प्रगतिशील देश नतमस्तक हो गये उस महाबल्ब को जो कि हमारे देश की तकनीकी धरोहर व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक बन चुका है। स्थानीय पुलिस को सीधे दूरदर्शन के द्वारा ही, जो कि संभवतः देख रहे होंगे, आदेश देता हूँ कि इस बल्ब को तुरन्त अपनी कस्टडी में ले ले और इस बल्ब को मैं राष्ट्रीय म्यूजियम में रखने का हुक्म देता हूँ। आप सभी को पुनः बधाई। जय हिन्द।

दृश्य : 18

बिजली की दुकान का दृश्य। पुलिस वाले क्लब को निकालने का प्रयास कर रहे हैं। गिरजा उन्हें रोक रहा है।

- दुकानदार लो गिरजा बाबू अपना बल्ब, और अब हमें मुक्ति दो।
- पंछी अरे बल्ब हमें दीजिये।
- गिरजा अरे वाह। यह कौन सी बात हो गई। पूरे दिन में भूखा प्यासा अपने परिवार के साथ बैठा रहा और आप मेरा बल्ब कैसे ले जायेंगे।
- सिपाही हम क्या करें, उपर से हुक्म आया है।

गिरजा लेकिन बल्ब मैंने खरीदा है, पैसे दिये हैं उसके यह कैशमेमों देखो।  
 सिपाही हम क्या करे, उपर से हुक्म आया है।  
 गिरजा लेकिन बल्ब मैंने खरीदा है, पैसे दिये हैं उसके। यह कैशमेमों देखो।  
 सिपाही हम पढ़े लिखे नहीं हैं। अब यह अदालत में बताना। हमें तो सरकार का हुक्म मानना है।  
 गिरजा चिल्लाकर लेकिन कैसे ले जाओगे यह बल्ब यह बल्ब मेरा है। मैंने खरीदा है। अगर यह  
 प्युज हो जाता तो देती तुम्हारी सरकार मुझे मुआवजा।  
 फतेहसिंह गिरजाबाबू को पकड़कर अबे बकवास बंद कर—अबे पकड़ो इसे तुम सब भी इसकी  
 बकवास सुन रहे हो। अनोखे, बल्ब निकाल। अगर भीड़ आगे बढ़ने की कोशिश करे तो  
 अश्रुगैस चला देना। सभी गिरजा को पकड़ते हैं। अनोखे बल्ब निकाल लेता है।  
 गिरजा देखो यह कानून है हमारे देश का। अरे मेरी ही बल्ब, मेरा न हुआ ? मैं किसी को छोड़ूंगा  
 नहीं। सुप्रीम कोर्ट तक जाऊंगा। चाहे मुझे अपने कपड़े तक ही क्यों न बेचना पड़े।  
 अंधकार

दृश्य : 19

कोर्ट का दृश्य। कोने में गिरजाबाबू खड़ा हुआ।  
 वकील माननीय न्यायाधीक्ष महोदय, मेरे मुवक्किल द्वारा खरीदे गये बल्ब का सुबूत है, कैशमेमो और  
 टीवी की वीडियो क्लिपस। कृपया गौर फरमाये।  
 न्यायधीश पूरे गवाहों और वादी द्वारा दी गई दलीलों से कोई इस निर्णय पर पहुँची है कि चूँकि इस  
 बल्ब से हमारा राष्ट्रीय सम्मान जुड़ा है। जिसके कारण हमारे देश की टेक्नालॉजी को सारे  
 विश्व में सराहा गया है। अतः यह कोर्ट हुक्म देती है शासन द्वारा महाबल्ब को राष्ट्रीय  
 म्यूजियम में रखने का निर्णय उचित और दूरदर्शी है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस बल्ब से  
 साक्षात्कार हमारे देश की औद्योगिक नीतियाँ से परिचित हो सकें और इसी के साथ कोर्ट  
 यह भी व्यवस्था कनती है कि वादी को इस बल्ब का खुदरा मूल्य इसके द्वारा कैशमेमों  
 उपलब्ध करने पर उसका भुगतान कर दिया जाये। अब कार्यवाही समाप्त की जाती है।  
 वकील वेरी वेरी सारी मास्टर जी, मैं हार गया।  
 गिरजाबाबू अंधकार होता है। इसी अंधकार में गिरजाबाबू के चीखने की आवाज आती है श्रीमान यह सरासर  
 अन्याय है। मैं इसके विरुद्ध सड़क पर जाऊंगा। अंधकार गहरा होता जाता है। देखा आपने,  
 अदालत ने भी सरकार के निर्णय सही ठहराया और मैं हार गया। मैं हार कर भी जीता हूँ।  
 मुझे मालूम है कि इस लड़ाई में मुझे कई लोगों ने भुनाया, तो कुछ ने मुझे भूना। कुछ एक  
 के लिये मैं एक मसालेदार विषय बना। मैं जानता हूँ कि यह मेरी व्यक्तिगत लड़ाई है। पर  
 यह मेरी अकेले की लड़ाई नहीं थी, क्योंकि इस लड़ाई में आम जनता ने भरपूर सहयोग  
 दिया। और जिस लड़ाई में जनता का सहयोग हो, वो लड़ाई कभी भी जीती जा सकती  
 है। चाहे सामने से हमला गोलियों और टैंको से ही क्यों न हो रहा हो। क्योंकि जनता में  
 बहुत बड़ी ताकत होती है। अब समय आ गया है कि हम लोग व्यक्तिगत स्वार्थ से निकल  
 कर उन लोगों के खिलाफ आवाज उठाये जो हम सीधे साधे लोगों का शोषण कर रहे हैं।  
 सब्जबाग दिखाये हैं झूठे झूठे, हमारे सपनों के सौदागर बने हुए हैं। उनके खिलाफ आवाज  
 बुलन्द करने का समय आ गया है। मैं जानता हूँ और समझता भी हूँ, इसलिये मैं अपने  
 देश की अदालत का सम्मान करता हूँ, उसके द्वारा दिये गये निर्णय और अपने देश के  
 संविधान का सम्मान करता हूँ।  
 सूत्रधार अरे मास्टर साहब आपकी लड़ाई में आप अकेले नहीं हैं। मास्टर साहब संघर्ष करो। हम  
 आपके साथ हैं।  
 गिरजा ऐसे नहीं शांति के साथ।  
 सूत्रधार जब तक हमारे मास्टर साहब को उनका बल्ब नहीं मिल जाता, तब तक हम अपने घरों में  
 बल्ब नहीं जलायेंगे।

दृश्य : 20

टी.वी. पर न्यूजरीडर उभरता है

- न्यूजरीडर आज पूरे देश में महाबल्ब के संबंध में न्यायालय द्वारा दिये गये निर्णय की चर्चा रही। न्यायालय ने केन्द्रीय शासन के निर्णय को उचित ठहराया। वहीं कई राजनैतिक एवं अराजनैतिक संस्थाओं ने इस प्रकरण पर पुनः विचार करने के लिए माननीय न्यायालय से अनुरोध किया है। उपभोक्ता मंच ने भी गिरजा बाबू के साथ आंदोलन में सम्मिलित होने की घोषणा करते हुए बताया कि आज पूरे देश में अंधकार रहेगा और देश का कोई भी नागरिक आज बल्ब नहीं जलायेगा।
- इस प्रकरण को लेकर शासन के उच्च क्षेत्रों में व्यापक हलचल मच रही है। नमस्कार।
- प्रधानमंत्री अपने कार्यालय से पूरे देश को निहार रहे हैं।**
- प्रधानमंत्री क्या हो गया हमारे देश को। अभी कल तक पूरा विश्व हमारे बल्ब की रोशनी से चौधियाया हुआ था और जब वो सेटेलाईट के जरिए देख रहा होगा कल तक महाबल्ब को लेकर चिल्लाने वाले इस देश में बल्ब तो क्या जुगनू तक हड़ताल पर हैं। यह हमारे लिए अत्यंत शर्म की बात है। अपने सचिव से अरे हमने तो यह महाबल्ब को म्यूजियम में रखने का निर्णय इसलिए लिया था कि इससे अन्य क्षेत्रों के वैज्ञानिकों को भी प्रेरणा मिल सके। न्यायालय में हमारे निर्णय को भी सही ठहराया। लेकिन यह देखों हमारी जनता इस भूतखाने में बैठी हुई है और सारे विश्व में अपना तमाशा बना रही है। कोई तरकीब है इससे निपटने की ?
- सचिव सर उचित होगा कि आप अपनी मंडली से इसको अनुमोदित करवा कर संसद के पटल पर रख दें।
- प्रधानमंत्री तो कोई समस्या तो नहीं होगी ?
- सचिव अरे नहीं सर जनहित में यह निर्णय संसद दे देगी और फिर आप को लौटा दो उस बल्ब को। कही ऐसा न हो कि हम सब ही फ्यूज हो जाये।
- प्रधानमंत्री तो ठीक है। करो मसविरा तैयार और फोन पर सभी को कैबिनेट की मीटिंग के लिए सूचित कर दो।

दृश्य : 21

टी. वी पर पुनः समाचार वाचक उभरता है।

- नीति नमस्कार ! मैं आपको कि महाबल्ब प्रकरण में एक नयामोड़ आ चुका है। शासन ने जनता की भावनाओं को आदर करते हुए निचले कोर्ट के निर्णय को संसद के सम्मुख प्रस्तुत किया। जहा संसद ने दो तिहाई बहुमत से एक बिल पारित कर श्री गिरजा बाबू को उनका बल्ब लौटाने का निर्णय किया है। हम लाईव टेलीकास्ट के जरिये आपको सीधे दिखा रहे हैं। ..... महाबल्ब को विशेष विमान से हवाईजहाज के जरिए शहर में लाया गया है। ..... मेयर ने महोदय बल्ब की अगवानी की। ..... अब बल्ब को इक्कीस तोपों की सलामी दी जा रही है। ..... इसे जीप में रखा गया है और इसकी शोभा यात्रा निकाली जा रही है। इसके आगे पीछे पुलिस और स्काउट की टुकड़िया, स्कूली बच्चें कतार बद्ध। ..... बल्ब पर हेलीकाप्टर द्वारा फूलों की वर्षा हो रही है। शहर की प्रमुख सड़कों से निकलकर श्री गिरजा बाबू के निवास पर ले जाया जा रहा है। जहां मुख्यमंत्री अपने कर कमलों से गिरजाबाबू को बल्ब सौपेगे। ..... अब आप देख रहें हैं, गिरजा बाबू के घर का दृश्य..... गिरजाबाबू दरवाजे पर खड़े हुए। साथ में सुरक्षा कर्मी भी....कमरे में बीच में एक बैनर लगा हुआ जिस पर लिखा हुआ कि, 140 घंटे तक बिना प्यूज हुए लगातार जलने वाला विश्व विख्यात महाबल्ब। मुख्यमंत्री महोदय बल्ब को अपने में कर कमलों में थामें हुए....प्रवेश करते हैं। मंदा बल्ब की आरती उतार रही है। श्री गिरजा बाबू के चहरे पर विजय की मुस्कान। जिले के कलेक्टर महोदय, मुख्यमंत्री महोदय से बल्ब लेकर होल्डर में लगा रहे हैं। मुख्यमंत्री जी स्विच की तरफ बढ़ते हैं और स्विच आन करते हैं।
- और इस तरह यह बल्ब जल... बल्ब जल कर बुझ जाता है उद्घोषक का स्वर बदल जाता है ओह गाड़ इस तरह यह बल्ब प्यूज हो गया। मैं नीति श्रीवास्तव, आपको स्टूडियो वापस ले चलती हूँ नमस्कार।

स्त्री के चेहरे झुक जाते हैं और सभी धीरे धीरे नीचे अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। गिरजा अपने स्थान से उठकर बाहर की तरफ जाता हुआ।

मंदा कहां चले ?

गिरजा नया बल्ब लेने

मंदा अब फालतू वक्त मत बरबाद करने जाओ। घर में ही रखे है। विदेशी कम्पनी के लोग आये थे तुमसे मिलने। तुम्हारे उपर विज्ञापन फिल्म बनाना चाहते हैं। वो दे गये है दो कार्टून बल्ब, अंदर रखें है, उनमें से निकाल कर लाती हूँ।

धीरे धीरे अंधकार होता है।

**नाटक के कापीराइट अधिकार "रंग विदूषक" के पास सुरक्षित है।**

सम्पर्क :

सचिव, रंग विदूषक,

प्लाट न. 1414, रंगश्री लिटिल बैले प्रांगण, विज्ञान केन्द्र के पास,

शांति मार्ग, शमला हिल्स

भोपाल — 462 013

दूरभाष : 0755 — 266 0083 E mail : rangvidushak @ hotmail.com,

**नाट्य मंचन से लेखक को निम्न पते पर अवगत कराने का अनुरोध है।**

फरीद बज़मी,

ग्रंथपाल, ग्रंथालय, पुलिस मुख्यालय,

भोपाल — 462 008

दूरभाष : 0755 — 2444604, 2444798ए मोबाईल 094253 92867

E mail : faridbazmi @hotmail.com, faridbazmi@rediffmail.com,